मूल्य : 25 रुपये
जनवरी - मार्च, 2022

वर्ष : 10, अंक : 43

नर्मदा समग्र

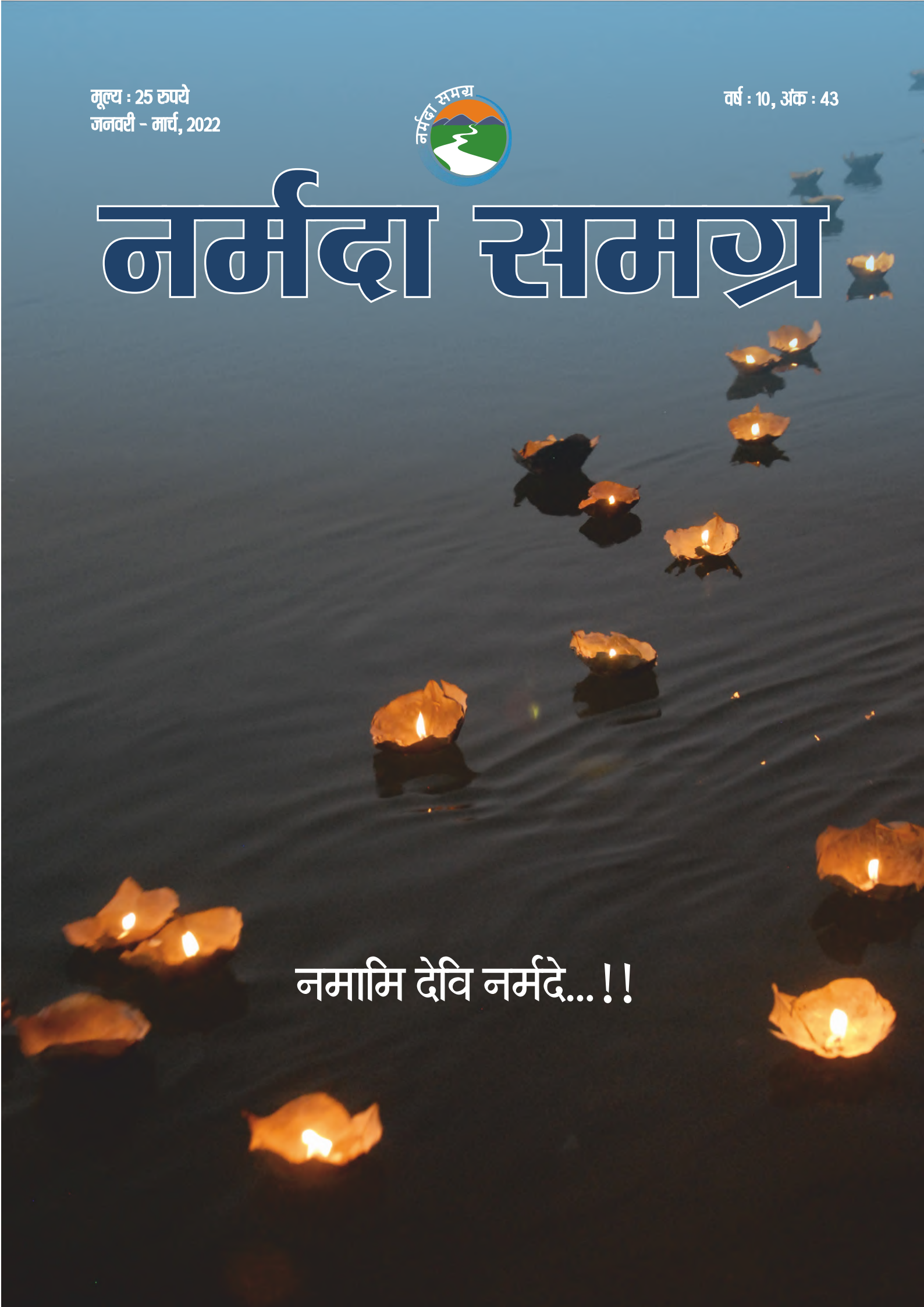

नमामि देवि नर्मदे...!!

नर्मदा समग्र
'अंतरराष्ट्रीय वन दिवस'
21 मार्च 2022
नर्मदा अंचल के वन, विशेषकर विंध्य, सतपुड़ा, मैकल पर्वत श्रेणी में फैले वन मध्य भारत की नदियों के प्राणवायु हैं। जैव विविधता के समृद्ध भंड़ार यह वन इस क्षेत्र के लिए वनोपज के साथ-साथ दीर्घकालिक जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने की धुरी हैं।
यहाँ से निकलने वाली नर्मदा, सोन, महानदी, ताप्ती तथा असंख्य सहायक नदियाँ भारत के कई प्रदेशों को सुजलाम्-सुफलाम् बनाती हैं।
आज वन है, तो कल जल है...

नर्मदा समग्र

का त्रैमासिक प्रकाशन

वर्ष : 10

अंक : 43

माह : जनवरी-मार्च 2022

संपादक

कार्तिक सप्रे

संपादकीय मण्डल

डॉ. सुदेश वाघमारे

संतोष शुक्ला

आकल्पन

संदीप बागड़े/दीपक सिंह बैस

मुद्रण

नियो प्रिंटर्स

17-बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल

सम्पर्क

'नदी का घर' सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल-462016

E-mail : narmada.media@gmail.com

@narmadasamagra @narmada_samagra

@narmadasamagra @narmadasamagra

@narmadasamagra www.narmadasamagra.org

इस अंक में .....

मध्यप्रदेश वनवासी समाज

1. संपादकीय 05
2. क्या हमारी नदियाँ बच सकेंगी 06
3. नर्मदा नदी का घटता जल स्तर 09
4. जल चेतना - पंच चेतना 11
5. नीर ब्रह्म की उपासना करें 14
6. नर्मदा प्रवाह में वनों की भूमिका 16
7. वनवासी समाज एवं वन संरक्षण 17
8. नर्मदा अंचल के वृक्ष 18
9. खेतों को पानी पिलाती खेत तलाई और जवाबदेही 19
10. नदियाँ प्राकृतिक संपत्ति है किसी का विशेष... 21
11. पानी के नवाचार में अग्रणी नीदरलैंड 23
12. उद्भव समाज को वसुधैव कुटुम्बकम् के रूप में.. 25
13. जामून की अद्भुत लकड़ी 28
13. घाट स्वच्छता का सतत प्रयास 29

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल से मुद्रित एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : कार्तिक सप्रे। फोन : 0755-2460754

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी नर्मदा जंयती के अवसर पर नदी का घर, भोपाल में नर्मदाष्टक एवं दीपदान कार्यक्रम किया गया, जिसमें केंद्रीय जल आयोग, मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी परिषद के अधिकारी, नर्मदा समग्र के न्यासी और नदी अनुरागी व कार्यकर्ता उपस्थित सम्मिलित हुए।

नर्मदा समग्र के भाग समन्वयक, नदी एम्बुलेंस की टीम के भोपाल प्रवास के दौरान म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के 'विज्ञान भवन' में सबका जाना हुआ। इस दौरान सभी ने MPCST द्वारा विज्ञान, जल, कृषि, सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों और योजनाओं के बरे में संक्षिप्त में समझा। MPCST के वैज्ञानिकों ने नर्मदा समग्र के कार्यकर्ताओं को वैज्ञानिक प्रक्रिया से वॉटर टेस्टिंग, रिमोट सेंसिंग, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) मैपिंग, प्लांट टिश्यू कल्चर, जैव प्रौद्योगिकी, डेटा संकलन इत्यादि विषयों के बारे में जानकारी दी। सभी कार्यकर्ताओं की म.प्र.प्रो.प. MPCST Bhopal के महानिदेशक डॉ. अनिल कोठारी जी से भी भेंट हुई, उन्होंने नर्मदा समग्र के कार्यों के बरे में जाना और नर्मदा जी एवं नदियों के संरक्षण कार्य हेतु रचनात्मक सुझाव देने के साथ म.प्र.प्रो.प. की ओर से यथासंभव मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान करने की बात कही।

नदियाँ, पहाड़, वन, वनवासी और उनके किनारे बसने वाले जीव-जंतु, समाज, सब मिलकर एक जीवन तंत्र बनाते हैं। यह तंत्र इसलिए है क्योंकि इसमें एक अनुशासन है। यह अनुशासन थोपा हुआ नहीं बल्कि स्वाभाविक है। किंतु पिछले कुछ दशकों से जब से समाज ने नदियों और प्राकृतिक संसाधनों को उपभोक्ता की नजर से देखना शुरू किया है, इस जीवन तंत्र की लय टूटने लगी है। प्रकृति के साथ हमारे संबंध की कड़ी साहचर्य न होकर बाजार हो गया है। परिणाम स्वरूप नदियाँ ही नहीं उनका पूरा परिवेश जिसमें जैव-विविधता, कृषि, लोक संस्कृति, आजीविका शामिल हैं, सभी बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। नदियों का नालों में बदलना या सुखना सिर्फ एक भोगौलिक बदलाव नहीं बल्कि संस्कृति का रस विहीन शुष्क हो जाने जैसा है।

बदलते परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए आवश्यकता है कि हम इसके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें और इसके विभिन्न पहलू जैसे जल की मात्रा, गुणवत्ता, जलग्रहण क्षेत्र में मिट्टी का स्वास्थ्य, समाज का व्यवहार, उद्योगों व रासायनिक कृषि से हो रहे दुष्परिणाम, अवैध खनन, वन घनत्व में कमी, जलीय जीवन, जैव-विविधता इत्यादि आयाम जो नदी के स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं उनका वैज्ञानिक, सामाजिक और पर्यावरणीय अध्ययन करना चाहिए।

इसमें कोई दो मत नहीं की माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा देश को स्वच्छ भारत का जो नारा दिया, स्वच्छ भारत अभियान जो चलाया यह बहुत ही महत्वपूर्ण है और इसके प्रभाव सबके सामने है। लोगों में जागरूकता आइ है, हम सब थोड़ा ही सही प्रयास करने लगे हैं स्वच्छता बनाए रखने का। नर्मदा समग्र द्वारा विगत दस वर्षों से स्वच्छता को लेकर विशेष करके नदी के किनारों, घाटों पर सफ़ाई को लेकर, लोगों को नदी व उसके आस-पास गंदगी न करने को लेकर चल रहे कार्य को भी और बल मिला। इससे इतना तो तय है की जब समाज और सरकार कुछ गतिविधियों को साथ में लेकर चलती है तो वह निश्चिय ही सफल होती है। और अकेले कार्य करने की जगह जब एक टीम की तरह काम होता है तो उसके प्रभाव भी अलग ही होते हैं।

> "नर्मदा हो या अन्य कोई छोटी-बड़ी नदी सब पानी का जीवित प्रवाह है, "जीवित तंत्र है"। अपने जल ग्रहण क्षेत्र से वे जल लेती हैं, जंगलों से साँस लेती हैं, उसके विभिन्न तंत्र स्वयं को स्वस्थ रखते हुए संपूर्ण नदी को स्वस्थ बनाये रखते हैं। नदी में स्वयं को स्वस्थ बनाने की वैसी ही शक्ति होती है जैसे किसी मनुष्य अथवा जीव में उससे व्यवहार करने वाले लोग उनमें बनी हुई सामाजिक रचनाएँ, उद्योग, सरकारी नीतियाँ व व्यवहार उसे अस्वस्थ या स्वस्थ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।" - अनिल माधव दवे

ऐसे ही इस अंक में हमें नदियों के बचने का प्रश्न, नदी में घटते जल स्तर, संरक्षण-संवर्धन के संबंध में सुझाव, वनवासियों की भूमिका, नदी किनारे समाज की भूमिका, वन रक्षक, प्राकृतिक संसाधन और आजीविका, नदी-पानी से संबंधित नीति-नियम, खेती-पानी का परस्पर संबंध, नवाचारों, धर्म-आस्था, आर्युवैज्ञानिक पक्ष, इत्यादि पर आधारित लेख पढ़ने को मिलेंगे जिसमें से दिशा मिले, हम कुछ अच्छी बातें आत्मसार कर सकें यही आशा है।

दुनिया भर में कई लोग, संस्थाए अपने विवेक-विचार से नदियों और उनके आस-पास के जीवन को संरक्षित करने की मुहिम में लगे हैं। हमारे देश में भी एसे प्रयास हो रहे हैं। मगर जितनी बड़ी चुनौती है, उसे देखते हुए हमें और अधिक लोगों, समुदायों, संगठनों, विशेषज्ञों, जनप्रतिनिधियों को साथ आना होगा। नदी और उससे संबंधित आयामों/पक्षों को समग्रता से देखना, समझना होगा। □

क्या हमारी नदियाँ बच सकेंगी ?

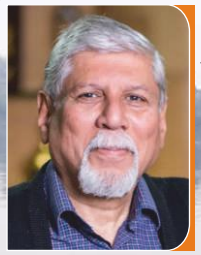

अभिलाष खांडेकर

(**लेखक** - वरिष्ठ पत्रकार, लेखक एवं पर्यावरण कार्यकर्ता हैं। वे द नेचर वॉलंटीर्ज़ (इंदौर) के संस्थापक भी हैं)

> वनों का, खुलीं ज़मीन का, वर्षा ऋतु का, तालाबों का, भूजल संग्रहण प्रणाली और अन्य पारिस्थितिकीय तंत्र का आपसी सम्बन्ध सीधे तौर पर नदियों के स्वास्थ्य से जुड़ा हैं। वह ठीक-ठाक चलने दिया गया तो भविष्य शायद सुरक्षित हो सकेगा। किंतु यह सब जानने-समझने का समय किसके पास हैं?

बिगड़ता पर्यावरण आज एक अत्यंत विकराल समस्या बनकर पूरे विश्व के सम्मुख मुँह बायें खड़ा दिखता हैं। मेरे आकलन से पर्यावरण संरक्षण से अधिक महत्वपूर्ण व जटिल दूसरा मुद्दा शासकों के लियें शायद ही कोई हों।

वैसे, बिगड़ते पर्यावरण को लेकर सबसे पहले भारत में आवाज उठाने वाले सज्जन थे 'चिपको आन्दोलन' के नेता सुन्दरलाल बहुगुणा। उन्होंने वर्ष 1972 में स्टॉकहोम परिषद् में अपने सिर पर लकड़ियों का गठठर रखकर नाटकीय ढंग से प्रवेश किया था और दुनिया की नजरें उत्तराखंड में बेतहाशा तरीके से काटे जाने वालें वनों की ओर मोड़ीं थीं। 'चिपको' ने पर्यावरण-संघर्ष का भारत में आगाज किया था।

उसके लगभग एक दशक पहलें, अमेरिका की जीव-विज्ञानी सुश्री रेचल कार्सन ने 1962 में 'साइलेंट स्प्रिंग' नामक पुस्तक लिखकर दुनिया में तहलका मचा दिया था। लेखक ने विश्व का ध्यान बढ़ते हुए रासायनिक उत्पादों, मुख्यतः खेती में उपयोग में लाए जा रहें विविध किटनाशकों, की तरफ खींचा था जिसके चलते भूमि की उर्वरता कम हो रहीं थीं एवं मानव प्रजाति के स्वास्थ्य पर विपरीत और खतरनाक असर पड़ रहा था जिससे दुनिया लगभग बेखबर थीं। विश्वभर के चिंतक, वैज्ञानिक, किसान, राजनेता आदि सभी हतप्रभ रह गए थे उनके खोज भरे वैज्ञानिक संशोधन से। लेकिन उनकी चेतावनी से भारत ने क्या सीखा हम सभी जानते हैं।

खैर, आज जब हम 2022 के मध्य में है, पर्यावरण की चिंताए अब सभी दूर स्पष्टतः दिखाई देती हैं। सोशल मीडिया पर कोई ना कोई नदी-तालाब की अच्छी-बुरी जानकारी पढ़ने या, आकर्षक बाघ या चिड़ियाँ का विडीओ या जल संरक्षण का ज्ञान अक्सर दिखाई-सुनाई देता हैं। कटते वन, विषैली होती मिट्टी, प्रदूषित हवा, नालों में तब्दील होती नदियाँ, गंभीर जल संकट, पक्षी, वन्यप्राणी व छोटें-छोटें किटकों या मधुमक्खी, तितली, केंचुआ, गिरगिट जैसे निरपराध जीवों पर मँडराते खतरें, पर्वतों-पहाड़ियों की निर्मम कटाई एवं उनपर होते मानवीय अतिक्रमण, समुद्र में बढ़ता प्लास्टिक्स, एवं खाद्य पदार्थों में गंदी मिलावट यह सब भारतीय तथा वैश्विक समाज के एक बड़े तबके की चिंता का सबब बन चुका हैं। लेकिन इस सब के बावजूद लाखों लोग इन ख़तरों से बेखबर हैं यह वास्तविकता मेरे जैसे पर्यावरण-प्रेमी की चिंता रोजाना बढ़ाती हैं।

जलवायु परिवर्तन, बढ़ते तापमान (ग्लोबल वॉर्मिंग) और तेजी से बिगड़ते शहरों के हाल ऊपर लिखीं समस्याओं से हम जोड़ते हैं तो हमारा सामना वाकई एक बहुत ही विकराल से संकट से होता हैं जिसके उपाय तुरंत ढूँढ़े जाना चाहिये वरना प्रलय जैसे हालात को टाला जाना असम्भव होगा।

यह बात सभी जानते हैं कि विश्व के अलग-अलग देशों की अपनी समस्याएँ हैं किंतु मेरा ठोस मानना हैं की भारत के हालात काफी अधिक गंभीर हैं क्योंकि हम ऊपर लिखी सभी समस्याओं से एक साथ जूझ रहें हैं और शायद कई और दशकों तक जूझता रहना पड़ेगा। ऐसा इसलिए भी कि हमारी तेजी से बढ़ती जनसंख्या, आर्थिक गतिविधियों का नयापन, गरीबी और एक बड़े उभरते धनाढ्य वर्ग का उपभोक्तावादी रवैय्या पर्यावरण को संरक्षित रखने के सारे सरकारी व गैर-सरकारी उपायों के बीच एक छोटें से रोड़ें समान नहीं, वरन एक विशाल पर्वत जैसा खड़ा हैं।

क्या ऐसे में हम देश की तमाम नदियों को जो करोड़ों लोगों को रोजाना पानी पिलातीं हैं, को बचा पाएँगे ? अनुभव यह बताता हैं की जिस देश में प्राचीनकाल से

> “नदियों को माँ का दर्जा मिला हुआ हैं, ऋषि-मुनियों ने उनकी पवित्रता का बखान वेदों और पुराणों में किया हैं उनका लगभग पूरा नाश हमारे समाज ने पिछले कुछ ही दशकों में कर डाला हैं। समाज क्या वाकई इतना स्वार्थी, भावना-शून्य हों चला हैं ?”

नदियों को माँ का दर्जा मिला हुआ हैं, ऋषि-मुनियों ने उनकी पवित्रता का बखान वेदों और पुराणों में किया हैं उनका लगभग पूरा नाश हमारे समाज ने पिछले कुछ ही दशकों में कर डाला हैं। समाज क्या वाकई इतना स्वार्थी, भावना-शून्य हों चला हैं ?

वनों का, खुलीं जमीन का, वर्षा ऋतु का, तालाबों का, भूजल संग्रहण प्रणाली और अन्य पारिस्थितिकीय तंत्र का आपसी सम्बन्ध सीधे तौर पर नदियों के स्वास्थ्य से जुड़ा हैं। वह ठीक-ठाक चलने दिया गया तो भविष्य शायद सुरक्षित हो सकेगा। किंतु यह सब जानने-समझने का समय किसके पास हैं? प्राचीन सरस्वती नदी जैसी लुप्त हो गई वैसे हालात अन्य नदियों के आज देखने को मिलते हैं, जों एक दुखद स्वप्न समान हैं। नदी विशेषज्ञ (स्व) प्रो. ब्रजगोपाल ने तो 2011-12 में कह दिया था कि गंगा की मुख्य नदी यमुना अपने अंतिम समय के निकट हैं। दिल्ली में आज उसके (सिर्फ़ 22 किलोमीटर) दयनीय हालात देखकर उनकी भविष्यवाणी खरी होती दिखाई देतीं हैं, और यह तब, जब दिल्ली और केंद्रीय सरकारों द्वारा यमुना नदी को स्वच्छ करने हेतु कई करोड़ रुपए पिछले एक दशक में खर्चा होना दर्शाया गया हैं।

बात सिर्फ गंगा-यमुना की नहीं हैं, वरन छोटी शहरी नदियों की भी हैं, चाहे वह इंदौर की कान्ह नदी हो या पुणे की मूला-मुठा हो या हों शात्री नदी महाराष्ट्र की या तमिलनाडू की ताम्रपर्णी। सभी की कहानी दुर्दशा के आँसू लिये हुए हैं। जिस देश की संस्कृति सिंधु घाटी सभ्यता के नाम से पूरे विश्व में अलग पहचान रखती हों, वहाँ की नदियों की ऐसी दुर्दशा हों जिसमें खुलें में शौच करने की आजादी हों, कचरा डालने पर कोई रोक-टोक न हों, बाँध बनाने पर नदी के भविष्य की चिंता इंजीनियर एवं ठेकेदारों को ना हों, यह सब ना सिर्फ अकल्पनिय हैं वरन असहनीय भी हैं। इसे बदलना ही होगा।

मुझे अमेरिका, इंग्लैण्ड, जर्मनी आदि कई प्रगत देशों में वहाँ कीं नादियों को नजदीक से देखने के मौके मिलें। किसी भी देश में मुझे भारत जैसा गन्दा दृश्य नहीं देखना पड़ा। ध्यान रहें, इन देशों में नदियों को माँ समान सम्मान नहीं हैं, किंतु वें सभी अत्यंत सुन्दर और स्वच्छ थीं। कई दशकों पहलें की कहानी हैं जब लंदन की टेम्ज नदी भयंकर प्रदूषण का शिकार हो गई थी और लंदन की महारानी और राज परिवार ने उसे पुनर्जीवित करने में बड़ी भूमिका अदा की थीं।

भारत में कुछ राज्यों में स्थानीय प्रयासों से ‘अघनाशिनी’ और ‘बेड्थी’ जों पश्चिम घाट के जंगलो में बहती छोटी नदियाँ हैं, को लोगों ने अपनी सूझ-बूझ व मेहनत से बचा लिया, वैसे ही जैसे राजस्थान की एक नदी को। ऐसे उत्साहवर्धक उदाहरण भी हैं हमारे बीच, किंतु बिरले हीं।

इस विशालकाय देश में, जहाँ 130 करोड लोग निवास करते हों, जिनका रहन-सहन भिन्न-भिन्न हो, सामाजिक ताना-बना जटिल हो, भयानक गरीबी और बेहद अमीरी भी हों, वहाँ पर्यावरण संरक्षण के मायने कुछ अलग हीं होंगे। लेकिन पर्यावरण को बचाने का पुनीत कार्य कई गैर सरकारी संगठन और साथ-साथ में केंद्र व राज्य सरकारें कर रहीं हैं। जमीनी बदलाव लाने में समय एवं भारी पैसा लगेगा। नई तकनीक भी आवश्यक होगी। लेकिन आशा तो रखना ही होगी।

गंगा प्रदूषित होने के कई वर्षों बाद, तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने ‘गंगा ऐक्शन प्लान’ (GAP) बनाया था जिसे 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने नई सोच के साथ, ‘मिशन-मोड़’ में कार्यान्वित करने की ठोस पहल की हैं। कुछ नतीजे दिखाई दिए हैं, परंतु काफी कुछ करना बाकी हैं।

आपको याद दिला दूँ की जब ख़तरनाक कोविड-19 ने देश-दुनिया में दहशत पैदा की थी और लगभग सारा देश बन्द रहा, लोग घरों में बंद रहें तब, गंगा अचानक स्वच्छ हो कर, कल-कल बहने लगी थीं। ऐसा सुंदर दृश्य भारतवासियों ने शायद पहली बार हीं देखा हों। वह हमेशा हमारी स्मृतियों में ताजा रहेगा। तो क्या प्रकृति की इस साधारण किंतु महत्वपूर्ण सीख कि पुनरावृत्ति कर हमारे में वो सारे बदलाव नहीं ला सकते हैं जिससे हम नदियों को गन्दा करने से स्वयं परहेज करे? क्या कानून का डंडा ही हमेशा उपयोग में लाना पड़ेगा? एक समय था देश में बाघों की संख्या तेजी से कम हो रही थी, अवैध शिकार बढ़ चुका था। पहलें सरिस्का (राजस्थान) व बाद में पन्ना (मध्यप्रदेश) इन राष्ट्रीय उद्यानों से बाघ क्रमशः 2002 व 2006 में पूरी तरह लुप्त हों गए थे। किंतु बाघ विशेषज्ञों ने हार नहीं मानी। नई तकनीक, मेहनत, नए कानून एवं, वन प्रबंधन को सशक्त बनाकर आज बाघों की संख्या में आश्चर्यकारक बढ़ोतरी दर्ज हुई हैं। नयें ‘टाइगर रिजर्व’ भी बनाए गए हैं जो अब उनके सुरक्षित आशियाने हैं।

मेरा विश्वास हैं कि यदि हम बाघ बचा सकते हैं और हमारी संरक्षण सफलता की कहानी को पूरे विश्व को सुना सकते हैं, दिखा सकते हैं तो हम पर्यावरण की अनेक समस्याओं को समझ कर उनके आपस में गुथे हुए पहलुओं को भी सुलझा सकते हैं।

हम हमारी नदियों को बचा सकते है, सुंदर बना सकते हैं, पुनर्जीवित कर सकते हैं। यह हमारा कर्तव्य हैं। आवश्यकता हैं ईमानदारी से प्रयास करने की, सरकारी योजनाओं में, (खास कर नदी संरक्षण के क्षेत्र में) में भ्रष्टाचार से बचते हुए अलग और नई तकनीकी के सहारे की। हमें यह ठानना होगा कि गंगा हो या नर्मदा, गोदावरी हो या कावेरी हम उसे प्रदूषित नहीं करेंगे ना किसी को करने देंगे।

यह सम्भव हैं। इच्छाशक्ति दिखानी होगी,
आपको, हमको, सबको।

नर्मदा नदी का घटता जल स्तर

जीर्णोधार एवं संरक्षण के विशेष संदर्भ में

डॉ. तरूण कुमार ठाकुर

(लेखक - प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष पर्यावरण विज्ञान विभाग इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक)

अमरकंटक नर्मदा नदी का उद्गम स्थल होने के कारण यह एक धार्मिक एवं दर्शनीय स्थल है, इसके धार्मिक एवं दर्शनीय स्थलों में मुख्य रूप से नर्मदा कुण्ड, मुख्य नर्मदा मन्दिर, कपिलधारा, माई की बगिया, रामघाट, शम्भू धारा एवं दुर्गा धारा है। अमरकंटक जैव विविधता का भी केंद्र है यहां पर विभिन्न प्रकार के औषधीय एवं सुगंधित पौधे बहुतायत में प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं जिनमें की मुख्य रूप से गुलबकावली, तुलसी, काली हल्दी, बस गिलोय, अश्वगंधा एवं सफेद मुसली है। यहाँ पर गुलबकावली का अर्क बहुतायत में मिलता है जो कि औषधीय गुणों से भरपूर होता है। अमरकंटक क्षेत्र में कई प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। जिनका अत्यधिक वाणिज्यिक एवं आर्थिक मूल्य है इस क्षेत्र के जनजाति समुदाय स्वास्थ्य की देखभाल में औषधि पौधों के उचित उपयोग को जानते हैं। वर्तमान अध्ययन में हमने पौधों की 157 प्रजातियाँ जिनमें जड़ी बूटियाँ, कंद, मूल, फल, घास, पर्वतारोही पौधों की जानकारी दी। जिसमें कुल 47 वृक्षीय प्रजातियाँ, 86 झाड़ीनुमा एवं 24 घासनुमा हैं। ये सभी वनस्पतियाँ परंपरागत रूप से नर्मदा नदी का ऊपरी जल ग्रहण क्षेत्र के स्थानीय जनजातीय समुदायों द्वारा उपयोग की जाती हैं।

वर्तमान अध्ययन में भूमि उपयोग एवं भूमि कवर में दशकीय परिवर्तनों की जांच करने का प्रयास किया गया है। नर्मदा का ऊपरी जल ग्रहण बेसिन क्षेत्र वर्तमान शोध का प्राथमिक उद्देश्य है। दशकीय भूमि उपयोग परिवर्तनों को समझने के साथ-साथ मानव जनित तनाव कारकों की पहचान कर उनका निदान करना है। पिछले 4 दशकों से नर्मदा नदी का ऊपरी जल ग्रहण क्षेत्र अमरकंटक, मध्य भारत ने वनों एवं जल निकायों का एक महत्वपूर्ण प्रतिशत कम हो गया है, अध्ययन के अनुसार जैव विविधता से भरपूर क्षेत्र में सघन वन का 11.63 प्रतिशत क्षेत्र कम हो गया है; साल मिश्रित वन का 2.11 प्रतिशत वन और 5.08 प्रतिशत जलाशय का क्षेत्र कम हुआ है। वर्ष 1980 से 2020 तक खुली भूमि के दौरान क्षेत्रफल में 7.52 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है; कृषि का 7.10 प्रतिशत क्षेत्रफल और बढ़ गया है; मानव निवास और व्यवसायिक क्षेत्र में 4.18 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

अमरकंटक क्षेत्र में नर्मदा एवं उसकी सहायक नदियाँ जैसे गायत्री, सावित्री, कपिला, बैतरणी एवं अरंडी मुख्य हैं। यह सभी नदियाँ वर्षा जल पर आधारित है, प्राकृतिक प्रचुर वर्षा इन नदियों के अस्तित्व से सकारात्मक रूप से सहसम्बद्ध है जो कि नर्मदा नदी को विकसित करती हैं। नर्मदा नदी भारत के कई शहरों की जीवन रेखा है दुर्भाग्य से यह मानवजनित गतिविधियों जैसे कारखानों का अपशिष्ट पदार्थों एवं कृषि अपवाह का नदी के जल में मिलने के कारण से नर्मदा नदी लगातार प्रदूषित हो रही है एवं इसकी सहायक नदियां लगभग विलुप्त हो चुकी हैं, नदी को नुकसान पहुँचाने वाली गतिविधियाँ अब अमरकंटक नदी के उद्गम स्थान पर भी हो रही हैं।

पिछले चार दशकों के बीच नर्मदा नदी के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र के भूमि उपयोग पैटर्न में बदलाव के लिए मानवजनित तनाव ज्यादातर जिम्मेदार रहे हैं। हमारे अध्ययन के परिणाम स्वरूप भूमि उपयोग परिवर्तन, निवास क्षेत्रों और वाणिज्यिक स्थानों में वृद्धि के साथ अध्ययन क्षेत्र में बढ़ते मानवजनित तनाव कारकों की ओर इशारा करते हैं। वनों का क्षरण और घास के मैदानों की अधिक चराई, नदी के पानी में गाद और प्रदूषकों के प्रवाह की समस्या के कारण पानी की गुणवत्ता में गिरावट के साथ-साथ आर्द्रभूमि के स्थान में कमी आई है। इसके परिणामस्वरूप पिछले कुछ वर्षों के दौरान क्षेत्र में लगातार जैव विविधता का नुकसान हुआ है। बसावट क्षेत्रों में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू और व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए नदी के पानी का अत्यधिक दोहन हुआ है। अपशिष्ट जल को बिना किसी उपचार के सिस्टम में वापस जोड़ दिया जाता है, जिससे पानी की गुणवत्ता खराब हो जाती है। क्षेत्र में मीठे पानी के संसाधन लगातार कम हो रहे हैं। भू-जल प्रदूषण संबंधित अध्ययन क्षेत्र से एक और उभरता हुआ मुद्दा है। इसलिए, वर्तमान समग्र अध्ययन की बहुत आवश्यकता हैं।

नर्मदा के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र में संरक्षण की प्राथमिकता के लिए दुर्लभ, लुप्तप्राय और संकटग्रस्त प्रजातियों की पहचान आवश्यक है। स्थानिक डेटा सेट के विस्तार के लिए भू-स्थानिक तकनीकों का उपयोग किया जाएगा जो कि स्थायी दृष्टिकोण के साथ वन पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए काफी आवश्यक है। इसके अलावा, चयनित गांवों में क्षेत्र सर्वेक्षण सामाजिक-आर्थिक स्थिति की जमीनी वास्तविकताओं और पारंपरिक तरीकों और वन उत्पादों के उपयोग के बारे में जानकारी एकत्र करने में मदद करते हैं। अंत में, अध्ययन ने मध्य भारत में नर्मदा नदी के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र के आदिवासी समुदायों द्वारा संभावित रूप से शोषित और उपयोग की जाने वाली कुल 157 प्रजातियों का दस्तावेजीकरण किया। अध्ययन ने संसाधनों के असंधारणीय और

अत्यधिक दोहन पर प्रकाश डाला जिससे पौधों की विविधता और जल निकायों में गिरावट आई। इसलिए, स्वदेशी समुदायों को शामिल करके नर्मदा की संवेदनशील प्रजातियों के साथ-साथ संबंधित नदियों के संरक्षण के लिए उपयुक्त प्रबंधन हस्तक्षेप का सुझाव दिया गया हैं। मैकल पर्वत श्रंखला से निकलने वाली ये नदियाँ जिन्हे ऊपर सूचीबद्ध प्राकृतिक और मानवजनित कारणों से खतरा है (रिस्टोरेशन) रणनीतियों द्वारा निर्देशित समग्र विकास समय की आवश्यकता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं निगरानी के अभाव के कारण इन नदियों का बदहली की हालत में हैं। पारिस्थितिक दृष्टिकोण से नर्मदा का ऊपरी क्षेत्र बहुत महत्वपूर्ण है और तत्काल ध्यान देने की जरूरत है। नर्मदा नदी के जीर्णोधार एवं संरक्षण के लिए इस ओर कार्य किए जाने आवश्यक हैं:

- अमरकंटक क्षेत्र में और उसके आसपास पवित्र नदी नर्मदा के उद्गम के क्षरण के कारण से शून्य स्तर का कारण जानने के लिए क्षेत्र में गहन हाइपर स्पेक्ट्रल उपग्रह अध्ययन की आवश्यकता है।
- उद्गम स्थल पर नदी के प्रवाह का मौसम संबंधी मॉडलिंग का उपयोग करके अध्ययन करने की आवश्यकता है।
- एक मॉडल 'वर्षा जल-जंगल-नदी जल' अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है।
- चूँकि मैकल पर्वत श्रृंखलाएँ (मूल क्षेत्र) खतरे में हैं, इसलिए इन पहाड़ों को स्थिर करने के लिए उपयुक्त वनस्पति और मिट्टी-जल संरक्षण प्रजातियों के रोपण की आवश्यकता है और इन पर्वतों को मानवीय हस्तक्षेप से मुक्त करने की आवश्यकता है और इस प्रकार क्षेत्र को परिवर्तित करने की आवश्यकता है एक वैज्ञानिक तरीके से उचित जैव-बाड़ लगाने के साथ सिल्वी-देहाती परिदृश्य में।
- मृदा-जल संरक्षण करने वाली प्रजातियों के रोपण में स्थानीय लोगों अर्थात जनजातियों की भागीदारी के साथ स्थानीय लोगों को संरक्षण के लिए पैच आवंटित करना और इसे प्रोत्साहित करना।
- पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं और क्षेत्रों की पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के भुगतान का कड़ाई से मूल्यांकन करने की आवश्यकता है, ताकि नुकसान की भरपाई की जा सके।
- मल्टीलेयर सिस्टम के साथ कैचमेंट में और उसके आसपास अच्छे वन कवर के प्रबंधन को मजबूत करने की जरूरत है, स्थानीय प्रजातियों को प्राथमिकता देने में 'मियामा की वन पद्धति' को अपनाया जा सकता है।
- सीवर ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) की व्यवहार्यता का आकलन करने की आवश्यकता है, हालाँकि एसटीपी का स्थान कोर जोन में नहीं होना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो एसटीपी वैज्ञानिक और विशेषज्ञ समिति की सिफारिश के अनुसार होना चाहिए।
- औषधीय पादप संरक्षण क्षेत्रों (एमपीसीए) की तर्ज पर हर्बल औषधि संरक्षण उस क्षेत्र में स्थानीय समुदाय की भागीदारी के साथ किया जाना चाहिए।
- पवित्र नर्मदा के जलग्रहण क्षेत्र में प्रतिनियुक्त वन कर्मियों को वैज्ञानिक रूप से शिक्षित और प्रशिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता है। □

"नर्मदा के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र में संरक्षण की प्राथमिकता के लिए दुर्लभ, लुप्तप्राय और संकटग्रस्त प्रजातियों की पहचान आवश्यक है। स्थानिक डेटा सेट के विस्तार के लिए भू-स्थानिक तकनीकों का उपयोग किया जाएगा जो कि स्थायी दृष्टिकोण के साथ वन पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए काफी आवश्यक है। इसके अलावा, चयनित गांवों में क्षेत्र सर्वेक्षण सामाजिक-आर्थिक स्थिति की जमीनी वास्तविकताओं और पारंपरिक तरीकों और वन उत्पादों के उपयोग के बारे में जानकारी एकत्र करने में मदद करते हैं। अंत में, अध्ययन ने मध्य भारत में नर्मदा नदी के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र के आदिवासी समुदायों द्वारा संभावित रूप से शोषित और उपयोग की जाने वाली कुल 157 प्रजातियों का दस्तावेजीकरण किया।"

जल चेतना - पंच चेतना

प्रदीप त्रिपाठी

(लेखक - वैद्य एवं सामाजिक कार्यकर्ता हैं।)

भारत के हृदय प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध मध्य प्रदेश तेजी और उत्साह के साथ विकास के पथ पर चल रहा है। हम स्वर्णिम मध्यप्रदेश का दर्जा भी पा लेंगे ऐसा प्रयास प्रदेश के लोग एवं देश प्रदेश की सरकारें लगातार कर रही है। मां नर्मदा के दोनों तटों पर कृषि क्षेत्र के लोग एवं नदी के स्वास्थ्य पर कार्य करने वाले संगठन, अशासकीय संस्थाऐ, अन्य सामान्य जन यदि अपने प्रयासों की प्रमाणिकता की कसौटी पर खरे उतरते है तो ऐसा पूर्ण विश्वास है दृश्य बदला जा सकता है, क्योंकि प्रकृति भी हम पर उधार है। हमें घने वनों की सौगात दी है। फॉरेस्ट सर्वे आफ इंडिया देहरादून की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में सर्वाधिक वन क्षेत्र मध्यप्रदेश में ही है।

सरकार की चिंता है कि ग्रामीण दूरस्थ क्षेत्रों में आधुनिक चिकित्सा शास्त्र के चिकित्सक पहुंचे इसलिए तरह-तरह के कड़े प्रावधान किए जा रहे हैं भारी मात्रा में अंग्रेजी दवाइयों की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जा रहा है साथ ही कई बार राष्ट्रीय एवं बड़ी दवा कंपनियां अपने तरीके से गांव कस्बों में बड़े नेटवर्क का जाल बिछा रही है इसके ठीक विपरीत विकसित देशों महानगरों में वनोषौधियां, वनस्पतियां हर्बल प्रोडक्ट जैविक उत्पाद को प्रमुखता से उपयोग में लाया जा रहा है विशेषकर उच्च वर्ग में हर्बल का प्रतिकूल प्रभाव साइड इफेक्ट तो नहीं होता इसी धारणा के कारण भारी उपयोग किया जा रहा है जब हम पढ़े लिखे शिक्षित वर्ग को वनों का महत्व समझ आ रहा है या आ गया है तो फिर क्यों उन वनवासी ग्रामीण आदिवासियों को हम एलोपैथी चिकित्सा की और धकेल रहे हैं जिसके दुष्परिणाम वैश्विक स्तर पर दिखाई दे रहे हैं आज के मध्य प्रदेश में एकमात्र हीरा उत्पादन करने वाला राज्य है यद्यपि हीरे से बनने वाली भस्म जो वज्र भस्म के नाम से जानी जाती है शास्त्रों के अनुसार सर्वाधिक मूल्यवान औषधि है जिससे बीमार कोशिकाओं को नष्ट कर नई कोशिकाओं को निर्माण करने की अद्भुत शक्ति है साथ ही साथ ऐसी कोशिकाएं जो अपनी सामान्य ग्रोथ से कई तेजी से ग्रोथ कर रही हैं जिसके कारण कैंसर जैसी गंभीर कठिन असाध्य रोगों का उत्पन्न हो रहा है इस पर भी इस भस्म का अद्भुत प्रभाव देखने में आया है लेकिन दुर्भाग्यवश शासन स्तर पर इस दिशा में कोई भी प्रयास नहीं हुआ है।

> "नदी का पानी हो या वहां की भूमि के अंदर मिलने वाला पानी हो वह अद्भुत रूप से स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से महत्वपूर्ण लाभकारी होता है, शरीर की पाचन शक्ति और शरीर के बाहरी अंगों में विशेषकर त्वचा एवं बालों में त्वरित ही लाभ दिखाई देता है।"

परंपरागत वन औषधियों के पंचांग जड़, तना जड़, तना पत्ती, बीज एवं फल का प्रयोग उपचार में तथा परंपरागत घरेलू उपचार किट के महत्व को समझते हुए दूरस्थ स्थानों पर रहने वाले आदिवासी वनवासी नर्मदा वासी और ग्रामीणों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है वही निवास करने वाले उन्हीं की भाषा शैली एवं वही रचे बसे वैद्य हकीम जड़ी बूटी विशेषज्ञ सामाजिक कार्यकर्ताओं को उनके अनुभव एवं अर्जित ज्ञान के आधार पर सर सम्मान स्थापित करने में मदद करने की आवश्यकता है तो शायद यह अधिक उपयोगी होगा आधुनिक विज्ञान चिकित्सा शास्त्र मुख्यतः उपचारात्मक एवं कार्य प्रणाली नियमन करने वाली ऑडियो तक ही सीमित है जबकि आयुर्वेद वन औषधियों का क्षेत्र उन विभिन्न कारकों पर विचार करता है जो स्वस्थ रहने में मनुष्य की सहायता करता है प्रकृति से सामंजस्य अच्छे स्वास्थ्य की गारंटी तेजी से बढ़ते शहरीकरण औद्योगिकीकरण कहीं प्रदेश का पर्यावरणीय संतुलन ही न बिगाड़ दे, इसकी चिंता करना आवश्यक है। अन्यथा मध्यप्रदेश की जीवनदायिनी मां नर्मदा नदी हमेशा के लिए प्रदूषित एवं उसके प्रवाह में कई प्रकार की समस्याएं आ सकती हैं जिस प्रकार की समस्याएं यमुना नदी में देखने में आई है। नर्मदा नदी के आसपास रहने वाले किसानों, फैक्ट्रियों और आबादी वाले क्षेत्रों से बड़ी मात्रा में प्रदूषित तत्व का प्रवाह या नालों की गंदगी को नदी में छोड़ दिया जाता है, डाल दिया जाता है वनों में सुधार के नाम पर कई दूरदर्शिता पूर्ण निर्णय लिए गए उदाहरण के तौर पर पूरे प्रदेश में यूकेलिप्टस के पेड़ लगाने के लिए करोड़ों रुपए होम कर दिए गए और यह बताया गया कि यह पेड़ अन्य देशों में बहुतायत मात्रा में है तथा काफी लाभकारी है इसके तेल एवं अन्य हिस्सों की भी भारी मांग रहती है आदि आदि लेकिन पर्यावरण के लिए हमारे प्रदेश के भूजल स्तर के लिए घनत्व वाले वनों के लिए मिट्टी कटाव के लिए इस पेड़ के महत्व का आकलन करने में चूक कर गए क्योंकि नीलगिरी मुख्यतः दलदली भूमि में या अधिक पानी वाले देशों में ही लाभकारी है बल्कि उल्टा दुष्प्रभाव यह हुआ कि गर्मी के मौसम में जिन क्षेत्रों में जिन वनों में यूकेलिप्टस लगाया गया था वहां आग लगने की घटनाएं एवं तेजी से आग फैलने का दायरा भी ज्यादा था क्योंकि यूकेलिप्टस में जो

वोलेटाइल ऑयल होता है वह अग्नि वर्धक होता है। जमीन में पानी का स्तर कम हुआ और आग लगने की घटनाओं में भी वृद्धि हुई वनों एवं औषधि पौधों के लिए हमें किसी अन्य देश की नकल करने की आवश्यकता नहीं है।

सबसे महत्वपूर्ण बात भारत में हम नदियों को मां की संज्ञा देते हैं, पालनहार की संज्ञा देते हैं उसके पीछे बहुत बड़ा महत्व है हमारे यहां पर जंगलों विशेष करके ऐसे क्षेत्र जहां पर जंगलों में सभी प्रकार के मिश्रित पेड़ पौधे जड़ी बूटियां प्राकृतिक रूप से उपस्थित हैं वहां के पानी में औषधि तत्वों की अधिकता एवं उससे होने वाले पर्यावरण के लाभ एवं मानवीय लाभ का बड़ा अनुसंधान का विषय है मध्य प्रदेश की दृष्टिकोण से यहां पर सभी ऋतु में समान अनुपात में अपना प्रभाव दिखाती है जबकि अन्य प्रदेशों में कहीं गर्मी कहीं बारिश कहीं ठंड काफी असंतुलित रूप में पढ़ती है इसका सीधा मतलब प्रकृति तो हमें स्वर्णिम ही मिली है और हम उसके साथ तारतम्य स्थापित करने की बजाय उस पर विजय प्राप्त करने में लगे हैं।

मध्यप्रदेश में पचमढ़ी के पास मटकुली स्थान पर एक गर्म पानी का स्रोत है जो वहां की एक स्थानीय नदी में स्थित है वहां पर बड़ी संख्या में लोग अपने त्वचा संबंधित बीमारियों एवं जोड़ों के दर्द संबंधित बीमारियों के लिए उस पानी का उपयोग करते हैं ठीक इसी प्रकार उत्तरांचल के देहरादून के पास सहस्त्रधारा करके एक बड़ा प्रसिद्ध स्थल है इसी प्रकार का एक और स्थल हिमाचल प्रदेश के मणिकरण जो कि सिख पंथ के की प्रसिद्ध गुरुद्वारा का स्थान भी है वहां पर गर्म पानी का स्रोत काफी व्यापक रूप में दिखाई देता है। उपरोक्त तीनों स्थानों की विशेषता है कि यहां पर लोग बड़ी संख्या में स्वास्थ्य लाभ के लिए जाते हैं इस पानी के स्नान मात्र से शरीर के अंगों को पानी में डूबा के रखने मात्र से या स्पर्श मात्र से कुछ ही समय में ल्यूकोडर्मा यानी सफेद दाग और जोड़ों का दर्द साइटिका गठिया स्पॉन्डिलाइटिस अर्थराइटिस आदि-आदि बीमारियों में अकल्पनीय लाभ दिखाई देता है यह एक गहन अध्ययन का विषय है, क्योंकि इन नदियों में आया हुआ पानी वहां लगे हुए मिश्रित वन जिसमें सभी प्रकार के पेड़ पौधे औषधीय पौधे खनिज तत्व प्राकृतिक रूप से उपलब्ध है उन का प्रभाव वहां बहने वाली नदियों के पानी में भी देखने में मिलता है भारत देश में गंगा को एक पवित्र नदी माना जाता है और ऐसा बताया गया है कि उस नदी मात्र उस नदी मात्र में स्नान करने पर आपके सारे पाप आपके सारे दुख दूर हो जाते हैं इसका गहराई से अध्ययन करने पर ध्यान में आता है कि यहां पाप और दुख से तात्पर्य कहीं शारीरिक विकृतियों से शारीरिक रोगों से तो नहीं है क्योंकि गंगा मैया का पानी पीने से और गंगा में स्नान करने से कई प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। अतः आध्यात्मिक कारणों से इसको दुःख और पाप दूर करने वाली नदी की संज्ञा दी गई लेकिन वास्तविकता में यह दुःख और यह पाप शारीरिक विकार ही थे। हमारी परंपराओं में ग्राम देवता, कुलदेवता, वास्तु देवता, न्याय देवता, ज्ञान देवता प्रचलित है इसी प्रकार नक्षत्र देवता ऐसी भी मान्यता है यदि हमारा वन महकमा तथा जल पर काम करने वाले लोग नदियों पर काम करने वाले लोग इन देवताओं के महत्व को समझ ले तो कम से कम प्रकृति के पांच में से तीन तत्वों को तो ठीक तरीके से संभाल कर प्रदूषण मुक्त रखा ही जा सकता है यह तीन तत्व पृथ्वी जल और वायु है जिस प्रकार हर नक्षत्र के एक देवता होते है उसी प्रकार हर देवता एक वृक्ष पर निवास करते हैं भारत में विशेषकर मध्यप्रदेश में जितनी भी धार्मिक मान्यताएं हैं उन मान्यताओं के पीछे कोई ना कोई वैज्ञानिक महत्व छिपा हुआ है।

27 जन्म नक्षत्रों के 27 नक्षत्र देवता है इनके आराध्य वृक्ष जैसे शमी अर्जुन बेल कदम नीम पीपल खेर आंवला नागकेसर से मल वास जामुन आम रीठा कुचला भृंगराज मदन पटोल कपूर इत्यादि है इन वृक्षों के नीचे आसपास रहने मात्र से एकाग्रता दी है एवं शरीर रोग मुक्त हो जाता है जिन वनों में इन वृक्षों का उपलब्धता है वहां के आसपास के पानी में चाहे वह बहता हुआ नदी का पानी हो या वहां की भूमि के अंदर मिलने वाला पानी हो वह अद्भुत रूप से स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से लाभकारी होता है शरीर की पाचन शक्ति और शरीर के बाहरी अंगों में विशेषकर त्वचा एवं बालों में त्वरित ही लाभ दिखाई देता है सभी जनमानस अच्छे से जानता है कि यह वृक्ष मिट्टी के कटाव को भी

रोकते हैं पर्यावरण के ताप को भी नियंत्रित करते हैं वायुमंडल में ऑक्सीजन की मात्रा को भी बढ़ाते हैं स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण छाया लकड़ी फल फूल औषधियों को मानव मात्र को दान देते हैं इन सब का महत्व वैज्ञानिक आधार पर साबित हो चुका है लेकिन फिर भी

हम विदेशों को देखकर अंधानुकरण कर रहे हैं।

नक्षत्र वनों की बजाय दिखावटी वृक्षों का वृक्षारोपण हो रहा है पीपल का वृक्ष एकमात्र ऐसा वृक्ष है जो 24 घंटे अनवरत रूप से ऑक्सीजन का उत्सर्जन करता है वायु का पीपल के पत्तों के स्पर्श में आने मात्र से कई संक्रामक वायरस नष्ट हो जाते हैं इन वायरस से बचाव करने के लिए शासन करोड़ों रूपयों की दवाइयां आयात

करता है जो कि हमारा पीपल का पेड़ निशुल्क ही करता है अब समय आ गया है कि हम इस ध्येय वाक्य प्रकृति की ओर का ईमानदारी से अनुकरण करें स्वर्णिम मध्यप्रदेश और स्वस्थ मध्यप्रदेश बनाने के लिए प्रकृति को उसके मूल रूप में सहेजने की आवश्यकता है केवल विशेषज्ञों से काम नहीं चलेगा, जो बड़े शहरों में ऐसी कमरों में बैठ कर विदेशों में घूमकर कार्य योजना बना देते हैं, बल्कि हमें उन जनजातियों, आदिवासियों, ऋषि, महर्षिओं, वैद्यकीय जड़ी बूटी विशेषज्ञों नदियों से प्रेम करने वाले लोगों संस्थाओं के साथ काम करना होगा नदियों एवं वन औषधियों खनिजों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए गंभीर प्रयास होने की आवश्यकता है आपको जंगल से जुड़े लोगों पर विश्वास करना होगा उनके साथ रहना होगा।

औषधि पौधों को जंगलों में बचाए रखना होगा ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ना होगा खनिजों को किस प्रकार से बचाया जा सकता है विचार करना होगा केवल शहरों में मेले लगाने व्याख्यान करने सेमिनार करने या तयशुदा प्रतिनिधिमंडल जो हर साल निर्यात की संभावनाओं के नाम पर विदेश भ्रमण करने पर लाखों करोड़ों रुपए बर्बाद कर आते हैं उससे बचना होगा अन्यथा मध्यप्रदेश मां नर्मदा प्रदूषित तो होगी ही साथ ही मां नर्मदा के स्वास्थ्य को संभाल कर रखने वाली औषधियां खनिज तत्व भी धीरे-धीरे समाप्ति की ओर चले जाएंगे। नर्मदा जी का उद्गम स्थल अमरकंटक के वनों में पाई जाने वाली प्रसिद्ध जड़ी बूटियां काली जीरी, शिवलिंगी, जटामांसी, मैदा, महामेधा, साल, परिणी, बड़ा अमोदा, नागकेसर, हंसराज आदि दुर्लभ हो गई है मध्यप्रदेश की सतपुड़ा, मैकल, विंध्याचल, महादेव पर्वत श्रृंखला से निकली पुण्य सरिता मां नर्मदा, सोन, जूहीला, पूर्णा, ताप्ती तवा, केन समेत कई सहायक नदियों का आध्यात्मिक महत्व होने के साथ-साथ यह नदियां अपने संपर्क में आने वाले क्षेत्रों पर्वतों को दुर्लभ जड़ी बूटियों के भंडार से सदा सर्वदा परिलक्षित करती रही हैं हम मध्य प्रदेश वासी प्रकृति की अनुपम भेंट को लेकर धन्य है लेकिन लगातार दोहन एवं पर्याप्त संवर्धन के अभाव में औषधीय पौधों का निरंतर क्षरण हो रहा है।

अगर स्थानीय कृषक आम जनमानस को विश्वास में लेकर शासकीय सेवकों एवं राजनीतिक इच्छा शक्ति का प्रबलतम इस्तेमाल नहीं किया गया तो गूगल वात शामक दर्द निवारक बच स्मृति वर्धक तनाव एवं मानसिक विकारों में लाभकारी सर्पगंधा रक्तचाप लाजवंती प्रदर रोग जैसी अन्य महत्वपूर्ण मध्य प्रदेश की औषधियां जो जल के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखती थी जिससे नदी भी स्वस्थ रहती थी और इस जल का उपयोग करने वाली जनता भी स्वस्थ रहती थी समाप्त हो जाएगी।

इन बीमारियों के लिए सर्वविदित नुकसानदायक एलोपैथी चिकित्सा के लिए पेन किलर, स्ट्राइड्स, एंटीबायोटिक दवाइयां की उपलब्धि सुनिश्चित करने के लिए करोड़ों रुपए का बोझ सरकार पर आ रहा है और भविष्य में और भी आएगा वास्तविकता में प्रकृति ने मनुष्य के रोग ग्रस्त होते ही रोगी के आसपास ही ठीक कर सकने वाली जड़ी बूटियां नदियों का अमृततुल्य जल उपलब्ध कराया है। लेकिन व्यर्थ ही दूर शहर, प्रदेश, देश भटक कर समय और पैसों की बर्बादी हो रही है इसका प्रमुख कारण वहां स्थानीय स्तर पर जानकारों को सम्मान स्थापित नहीं किया गया जिनकी निष्ठा श्रद्धा जंगलों में और नदियों में थी उनको तटस्थ कर दिया गया। जबकि सिर्फ शल्य चिकित्सा हेतु ही बाजार जाने वाले की आवश्यकता थी आज पूरे विश्व एवं देश की निगाह हमारे प्रदेश की मुख्य नदी नर्मदा एवं उप नदियों तथा प्रदेश की जड़ी बूटियों पर है हमारे प्रदेश में बड़ा क्षेत्र मां नर्मदा के संपर्क में है।

संपूर्ण प्रदेश में जड़ी बूटियां सर्वत्र फैली हुई है अतः इस ओर ध्यान दिया जाना अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यक और अब तो मजबूरी भी होता जा रहा है अतः जल, जंगल और जमीन इन तीनों का स्वास्थ्य आपस में जुड़ा हुआ है इन्हीं तत्वों से मिलकर मनुष्य भी बना है अतः संपूर्ण तत्व आपस में रचे बसे हैं। कुल मिलाकर सभी को एक दूसरे का ध्यान रखने की आवश्यकता है प्रकृति अपना काम कर रही है मनुष्य को अपना काम करना बाकी है। □

नीर ब्रह्म की उपासना करें

भरत बैरागी

(लेखक - अध्यक्ष, महर्षि पतंञ्जलि संस्कृत संस्थान, म.प्र. एवं म.प्र. योग आयोग के उपाध्यक्ष हैं)

या सृष्टिः स्रष्टुराद्याः हमारी परम्परा कहती है कि जल विधाता की सर्वप्रथम सृष्टि है। यह समस्त सौन्दर्य का बीज है। सनातन भारतीय संस्कृति जलीय तत्त्वों से ओतप्रोत है। जल के बिना हमारा अस्तित्त्व कथमपि सम्भव नहीं है। सर्वमान्य तथ्य है कि विश्व की सभी श्रेष्ठ संस्कृतियों का विकास नदियों के तट पर हुआ है। हमारी वैदिक ऋषि परम्परा पर्वतों की कन्दराओं में तथा नदियों के संगम में विप्रत्व की सम्भावनाओं को अभिव्यक्त करती है-

उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनां धिया विप्रो अजायत। (ऋग्वेद,8/6/28)

भले ही यज्ञ यागादि अनुष्ठानों में अग्नि तत्त्व की प्रधानता दिखाई दे पर जब तक यज्ञीय पदार्थों पर पावन नीर का प्रोक्षण नहीं होगा तब तक यागादि से उस अपूर्व की निष्पत्ति नही होगी जो फल प्रदान करने की योग्यता धारण करता है। तो हमारी परम्परा कहती है कि जल चेतन ही नहीं जड पदार्थों को भी संस्कृत करने का सामर्थ्य रखता है। क्षेत्र (खेत) में बोये बीज का अंकुरण जलीय स्पर्श के बिना कथमपि सम्भव नहीं है। कदाचित् इसीलिए वैदिक ऋषियों ने धरती पर पानी बरसाने वाले इन्द्र की सर्वाधिक स्तुतियाँ की है। वरुण जल का अधिष्ठातृदेवता है। जो जल की रक्षा करता है या जो जल की वर्षा करता है हमारी परम्परा उसमें देवत्व का आविष्कार कर लेती है।

हमारा सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय जड को चेतन बनाने वाले व्यापक जलतत्त्व की महिमा का गुणगान करता है। वरुण पर्जन्य और आपः सूक्तों का सम्बन्ध जलतत्त्व से ही है। ऋग्वेद में चार सूक्त आपः अर्थात् जलदेवता के लिए पठित है। आपः सूक्त के द्रष्टा महर्षि वसिष्ठ है। जैसे पुत्र अपनी माँ से संवाद करता है वैसे ही महर्षि विश्वामित्र नदियों से संवाद करते हुए उनकी स्तुति करते हैं। वे ऋग्वेद 3.33 सूक्त में विपाशा और शुतुद्री नदियों से अत्यन्त प्रेरणादायक संवाद करते हैं। पर्वतों की उपत्यकाओं से निकली ये नदियाँ भूमि पर बहती हुई अपने दोनों ओर के तटीय प्रदेशों को उसी प्रकार सींचती हैं जैसे जननी अपने जाये

"वर्षाकाल में धरा की नम्रता किसान अच्छे से समझते हैं। मिट्टी में नमी आने की सुवास किसानों की सुपरिचित है। ऐसी नम्र धरा में गायों के खुरों की सुन्दर आकृतियाँ और उनमें बारिश का पानी भर जाना तथा अनेक रंगों से विश्वरूप वनस्पतियों के खिलने का अनुपम सुन्दर दृश्य वैदिक ऋषि के हृदय को निश्चित ही अनोखा सुख प्रदान करता होगा। वैदिक काल से ही भारतीय मनीषा ने मानव जीवन के लिए जलतत्त्व के महत्त्व को भलीभाँति समझ लिया था।"

वत्सों का पालन करती हैं। उसी प्रकार महर्षि अत्रि ऋग्वेद के पञ्चम मण्डल के 83 वें सूक्त में अन्तरिक्ष में नीर से भरे गरजते बरसते पर्जन्य देवता को स्तुतिपूर्वक पुकारते हुए दिखाई देते हैं। ध्यातव्य है कि ये वसिष्ठ, अत्रि और विश्वामित्र सनातन संस्कृति में परिगणित सप्तर्षियों में अन्यतम हैं। वेदों में बहुधा सप्तसैन्धव (सात नदियों गङ्गा, यमुना, दृषद्वती, सरस्वती, सिन्धु, विपाशा और शुतुद्री) का उल्लेख प्राप्त होता है। हमारी सनातन संस्कृति सप्तर्षियों की दिव्य आध्यात्मिक उदार भावनाओं से समन्वित है, सप्तसिन्धुओं के द्वारा अभिषिञ्चित है, सप्त कुलाचलों की भाँति सुप्रतिष्ठित भी है।

वैदिक ऋषि मधुर रस से ओतप्रोत, स्वच्छ कान्तिमान् और पावनता का आधान करने वाले जल देवता से संरक्षण की प्रार्थना करते हैं-

मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु। (- ऋग्वेद,07/49/03)

जिस पर्जन्य के व्रत में धरा विनम्र हो जाती है, जिस पर्जन्य के कर्म से खुरों से युक्त गाय आदि प्राणी पूर्ण होते है और जिस पर्जन्य के प्रभाव से वनस्पतियाँ विश्वरूप (अनेक प्रकार से अंकुरित) हो जाती है, वैदिक ऋषि उस महान् पर्जन्य देवता से महत्त सुख प्रदान करने की मङ्गलमय प्रार्थना करते हैं-

यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति।
यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपाः स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ। (- ऋग्वेद,05/83/05)

वर्षाकाल में धरा की नम्रता किसान अच्छे से समझते हैं। मिट्टी में नमी आने की सुवास किसानों की सुपरिचित है। ऐसी नम्र धरा में गायों के खुरों की सुन्दर आकृतियाँ और उनमें बारिश का पानी भर जाना तथा अनेक रंगों से विश्वरूप वनस्पतियों के खिलने का अनुपम सुन्दर दृश्य वैदिक ऋषि के हृदय को निश्चित ही अनोखा सुख प्रदान करता होगा। पर विडम्बना यह कि वैश्वीकरण और तथाकथित तकनीकी के इस युग में यह दृश्य प्रकृतिप्रेमियों का दिवास्वप्न बनकर रह गया है, क्योंकि हमने तथाकथित प्रगतिशीलता के चलते जल को चेतन देवता नहीं अपितु जड पदार्थ मान लिया है, अब मानव उसे पूजा की नहीं भोग की वस्तु मानता है, पर्जन्य अब देवता नहीं मानसूनी गतिविधि मात्र है। वैदिक काल का मनुष्य पर्जन्य देवता का प्रत्यक्ष कर भावपूर्ण हृदय से आनन्दातिरेक से नृत्य करता होगा पर आज का मनुष्य वैज्ञानिक संयन्त्रों से पर्जन्य का पूर्वानुमान करता है। जो सहज प्रत्यक्ष था हमने

उसे अनुमान का विषय बना लिया। आज भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को उस वैदिक चिन्तन की आवश्यकता है जो प्रकृति के अनुकूल विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।

वैदिक काल से ही भारतीय मनीषा ने मानव जीवन के लिए जलतत्त्व के महत्त्व को भलीभाँति समझ लिया था। वैदिक निघण्टु में पानी के सौ पर्याय शब्दों का प्रयोग यह बताने के लिए पर्याप्त है कि पानी उस समय केवल मनुष्य की रसनेन्द्रिय का विषय नहीं था, बल्कि वह बाह्येन्द्रियों से परे अन्तरिन्द्रिय मन बुद्धि और यहाँ तक कि वैदिक मानव की आत्मा में रचा बसा था। वह मानवीय सभ्यता और संस्कृति को सींचने की रसधारा थी। वैदिक ऋषियों ने जल की उस ऊर्जा को समझा था जो मानव जीवन के प्रत्येक अंग को चैतन्य प्रदान करती है । वैदिक चिन्तन में जल ही अग्नि का उपादान है। वह मानव जीवन को ऊर्जस्वी बनाने का प्रकृष्ट साधन है। शुक्लयजुर्वेद का यह प्रसिद्ध मन्त्र आज भी हमारी दैनन्दिन प्रार्थनाओं में सम्मिलित है-

पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ।
पयस्वतीः प्रदिश सन्तु मह्यम् ॥ 36॥

वैदिक ऋषि जल के लिए अग्नि को हवि प्रदान करते हुए कितनी सुन्दर और मंगलमय प्रार्थना करता है कि - हे अग्ने ! हमारी पृथिवी में रस (पयः) हो, ओषधियों में रस हो, स्वर्ग और अन्तरिक्ष में रस का निधान हो और हमारे लिए सभी दिशाएँ पयस्वती अर्थात् रसमयी बनी रहे। 'अप्सु रस ऊर्जो नाम' जल ही आग्नेय ऊर्जा का उपादान है। 'आपो वा ऊर्जः अद्भ्यो ह्यग्निर्जायते' इत्यादि वचनों का तात्पर्य बताते हुए भाष्यकार महीधर कहते हैं-

कीदृश्यः ऊर्जः, ऊर्जयन्ति जीवयन्ति धान्योत्पादनेन इत्यूर्जः।

अर्थात् जल ओषधियों और वनस्पतियों को ऊर्जित अर्थात् जीवन प्रदान करता है इसलिए ऊर्जा उसकी संज्ञा है। वैदिक चिन्तन में जल का आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक महत्त्व अपनी समग्रता के साथ रूपायित हुआ है। संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों के अनेक सन्दर्भ जल तत्त्व की उपादेयता का निरूपण करते हैं। जल के सन्दर्भ में यह उदात्त वैदिक चिन्तन न केवल संस्कृत साहित्य में अपितु भारतीय लोकमानस में भी उतनी ही समग्रता एवं पावनता के साथ अभिव्यक्त होता रहा है ।

भारतीय परम्परा में जल तत्त्व को अत्यन्त पावन कहा गया है। जल से ही पावनता का आधान होता है। यागादि अनुष्ठानों में जल के प्रोक्षण के बिना अपूर्व की निष्पत्ति सम्भव ही नहीं है। अंजुरी में भरा जल संकल्पशक्ति का महत्तर प्रतीक है। कोई भारतीय चाहे वह अनपढ ग्रामीण ही क्यों न हो, अपनी अंजुरी में पानी भरकर सत्य कहने की शपथ लेता है। हाथ में जल हो तो असत्य कहा नहीं जायेगा यह लोकपरम्परा जल की दिव्य शक्ति की सूचक है। तीर्थोदक और अग्नि को हमारी परम्परा ने नित्य पवित्र माना है।

तीर्थादकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः॥
(उत्तरामचरित, 1)

हमारी परम्परा रसब्रह्म की उपासना करती है। रस जलीय तत्त्व है - आपो वै रसः। भारतीय जन गण मन में नराकार ईश्वर और निराकार ईश्वर के अतिरिक्त एक नीराकार ईश्वर भी विराजमान है। आज उसी नीराकार ईश्वर की उपासना का समय है

नराकारं भजन्ति केचित् निराकारं तथापरे ।
वयं तु तापसन्तप्तः नीराकारमुपास्महे ॥ (-कस्यापि)

कुछ लोग राम कृष्ण आदि नराकार ईश्वर की उपासना करते हैं, कुछ निराकार ब्रह्म की उपासना करते हैं । हम तो ताप से सन्तप्त हैं इसलिए नीराकार ईश्वर रसब्रह्म की उपासना करते हैं । □

नर्मदा प्रवाह में वनों की भूमिका

डॉ. योगेश वाजपेयी
(लेखक - साहित्य समय के संपादक हैं।)

जंगल बादलों के उतरने के हवाई अड्डे हैं। हम देखते है कि जहाँ घने वन होते हैं, वहाँ वनों की आर्द्रता से द्रवित होकर बादल अधिकाधिक वर्षा करते हैं। किंतु वायुमंडल के जल को खींचकर वर्षा कराने में वनों की भूमिका से वैज्ञानिक पृथक-पृथक विचार देते हैं। - अमृत लाल वेगड़

वनों के अस्तित्व और नर्मदा के प्रवाह के मध्य की कड़ी को समझने हेतु नर्मदा व नर्मदा की सहायक नदियों में प्रवाह की निरन्तरता तथा जल की गुणवत्ता बनाए रखने में वनों की भूमिका का वैज्ञानिक आधार जानना जरूरी है। नर्मदांचल के वन, पानी, मृदा, जैव विविधता और जन-जीवन की आपसी निर्भरता को वैज्ञानिक तथ्यों के दर्पण में जानने की एक कोशिश करेंगे।

'सौन्दर्य की नदी नर्मदा' के लेखक श्री अमृत लाल वेगड़ वनों को एक अद्‌भुत उपमा देते हैं कि - जंगल बादलों के उतरने के हवाई अड्डे हैं। हम देखते है कि जहाँ घने वल होते हैं, वहाँ वनों की आर्द्रता से द्रवित होकर बादल अधिकाधिक वर्षा करते हैं। किंतु वायुमंडल के जल को खींचकर वर्षा कराने में वनों की भूमिका से वैज्ञानिक पृथक-पृथक विचार देते हैं।

वनों की उपस्थिति और वर्षा की मात्रा में साधारणतः प्रत्यक्ष संबंध की मान्यता जनमानस में है परन्तु अधिक वनों के कारण अधिक वर्षा होना या वनों का वनाभाव के कारण वर्षा की मात्रा में कमी हो जाने की धारणा वैज्ञानिकों के समुदाय में लम्बे समय से बहस का कारण रही है। मेघ वनों और गैर-मेघवनों की जलोत्पादक सम्बन्धी क्षमताएँ अलग-अलग होती है, नर्मदा अंचल के वनों में विशुद्धतः मेघवन जैसी स्थितियाँ प्रायः नहीं पायी जाती हैं। नर्मदा उद्‌गम क्षेत्र अमरकंटक व पचमढ़ी (होशंगाबाद) और निकट के क्षेत्रों में वर्षा के मौसम में मेघ वन जैसी, स्थितियाँ दिखायी देती है, पर वर्षा कराने में इनकी भूमिका के सम्बन्ध में नर्मदा पर वैज्ञानिक शोध नहीं होने से अभी यही कहाँ जा सकता है कि यहां पहड़ों की ऊँचाई कम होने के कारण बादलों को रोककर वर्षा कराने में इन वनों की भूमिका सीमित ही है। पर धरती पर गिरे जल को सोखकर भूजल स्तर बढ़ाने में ये वन अति महत्वपूर्ण काम करते हैं।

नर्मदा प्रवाह की धारा को अविरल बनाए रखने में नर्मदा के आसपास के वनों की महती भूमिका है। यहाँ हिमालय से निकल कर प्रवाहित नदियों की तरह बर्फयुक्त हिमन दो (ग्लेशियरों) के पिघलने से निरन्तर जल प्राप्त नहीं होता है। नर्मदा में जल का एकमात्र आधार मानसूनी वर्षा है। मानसून में हुयी वर्षा से प्राप्त जल से ही नर्मदा की सहायक छोटी-बड़ी नदियों को वर्ष भर काम चलाना पड़ता है। नर्मदा और इसके अपवाह तंत्र में आने वाली सभी सहायक नदियों के जल की सारी की सारी आपूर्ति मानसून के समय मात्र कुछ माह में ही होती है। मानसून के समय नर्मदा की सभी सहायक नदियाँ भी बाढ़ पर रहती हैं। मानसून के बाद अधिकांश सहायक छोटी नदियाँ लगभग सूख जाती हैं। वर्षा के समय जलागम में आये जल का रिसाव शनैः शनैः करके इन सहायक छोटी नदियों को सदानीरा रखने में नर्मदा क्षेत्र के वन अति महती भूमिका का निर्वहन करते हैं। सतपुड़ा और विंध्य पर्वतमालाओं में पसरे ये वन स्वयं तो जल उत्पन्न नहीं करते हैं पर जल रिसाव को नियंत्रित करने में भगवान शंकर के जटाओं सरीखी भूमिका का निर्वहन कर वर्षा जल को एकत्र करने और बाढ़ में जल को व्यर्थ प्रवाहित होने से रोकने में सहायक बनकर कई माह तक धीरे-धीरे मुक्त करते हुए अंचल की अनेकानेक लघु सरिताओं को सदानीरा बनाए रखने की महती भूमिका का निर्वहन करते हैं। यह वन जल का उत्पादन करने में इस प्रकार महत्वपूर्ण हैं।

वर्षा जल को भूमि में रोकने और जलधाराओं में निरन्तर प्रवाह बनाए रखने की भूमिका वन अपनी विशेष रचना के कारण ही निभा पाते हैं। वन एक विज्ञान तंत्र की तरह भूमिका का निर्वहन करते हुए वर्षा की बूंदों को अपने ऊपर ले लेता है और प्रवाहित जलावेग का कम करके उसे धरा की निचली पर्तों में उतारने में सहायता करता है। वनों का यह गुण हिमविलीन नर्मदा के प्रवाह को वर्षा के उपरांत भी सदानीरा रखने में काम आता है। वर्षापूरित नर्मदा के साथ ही नर्मदा की सहायक नदियों के मामले में भी यह तथ्य विशेष प्रासंगिक हैं।

हिमरहित नर्मदा में अविरल धारा बनाए रखने का सर्वाधिक व्यावहारिक कारण और प्राकृतिक स्रोत सघन वन ही हैं। नर्मदा के जल तंत्र में भी पहाड़ी सघन वनों से आच्छादित क्षेत्रों में छोटी सहायक नदियाँ दीर्घकाल तक अविरल प्रवाहित होती रहती हैं। अस्तु सदानीरा नर्मदा प्रवाह में वनों की ही महती भूमिका है। □

वनवासी समाज एवं वन संरक्षण

मध्यप्रदेश 'वन' वनवासी समाज

मध्य प्रदेश वन संपदा की दृष्टि से समृद्ध एवं सजा-संवरा राज्य है। राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 30.72% भाग वन क्षेत्र के तहत आता है। जो देश के कुल वन क्षेत्र का 12.4% है।

विवेक जैन

(लेखक - मध्यप्रदेश राज्य परियोजना प्रबंधक उद्योगिनी)

वर्तमान समय में वन विकास की वही अवधारणा ग्राह्य हो सकती है जिसमें आदिवासियों का हित सुरक्षित रहे और उनका जुड़ाव वनों से बना रहे। आदिवासियों एवं वनों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। हमारी संस्कृति मूलतः अरण्य संस्कृति रही है। वन एवं वन्य जीवों को वहाँ के स्थानीय वनवासियों द्वारा अपने परिवार का अंग माना गया।

वनवासी समाज द्वारा वनों में स्वंत्रतापूर्वक रहकर वहीं से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुये सदैव वनों को संरक्षित करने का कार्य किया है। विगत कुछ दशकों में आदिवासियों एवं वनों के बीच दूरी बढ़ी है। वे वनवासी जो वनों एवं वन्यजीवों के स्वाभाविक मित्र थे, हाल ही के कुछ दशक पूर्व से उन्हें वन का विरोधी मानते हुए उनके परम्परागत अधिकारों में कटौती की गई है लेकिन महाराष्ट्र एवं पूर्वोत्तर के कुछ राज्य पिछले कुछ वर्ष से CFRR को लागू कर ग्राम सभाओं को सामुदायिक वन क्षेत्र की सुक्ष्म कार्य योजना बनाने हेतु वित्तीय सहयोग प्रदान कर रहे है। महाराष्ट्र में ग्राम सभाओं को सक्षम करते हुए सामुदायिक वन प्रबंधन का एक डिप्लोमा कोर्स भी प्रारंभ किया है। ओडीसा एवं महाराष्ट्र में जिला स्तरीय कनव्हर्जन्स कमेटी स्थापित करते हुए सामुदायिक वन क्षेत्र के पुनर्निर्माण एवं संवर्धन हेतु ग्राम सभा को तकनीकी एवं वित्तीय सहयोग भी देना शुरू किया है। आज की पहल से देश के अन्य राज्यों में भी अब यह सामुदायिक अधिकार देने का कार्य गति पकड़ेगा।

देश में कई ऐसी स्वयंसेवी संस्थाएं है जो जनजाति समाज को, विशेषतः जनजाति समाज के जन प्रतिनिधियों, सामाजिक नेताओं और जनजाति समाज के शिक्षित युवाओं को आह्वान करता है कि, वन क्षेत्र पर निर्भर जनजाति समाज के गांव, टोला, पाडा, बस्ती को इकट्ठे लाएं, उनकी ग्राम सभाओं के जरिये इस कानून के तहत सामुदायिक वन संसाधनों पर अधिकार प्राप्त करने हेतु उचित प्रक्रिया से आवेदन करवाएं। गांवों में जनजागरण और उन्हें संगठित कर वन संसाधनों का पुनर्निर्माण, संवर्धन करते हुए वनों की रक्षा करें। इससे वन पर्यावरण एवं जैव विविधता की रक्षा होगी, ग्रामीण जनजातियों को उपलब्ध स्थानीय आजीविका भी सुरक्षित होगी जिससे पलायन भी रोका जा सकेगा।

मध्यप्रदेश सरकार को चाहिए कि संयुक्त गाइड लाइन के अनुसार राज्य में वन एवं जनजाति विभाग मिलकर इस सामुदायिक वन संसाधनों के अधिकारों को राज्य के प्रत्येक गाँव तक - ग्रामसभा तक पहुंचाए। ग्राम सभा को मजबूत बनाते हुए उन्हें तकनीकी एवं वित्तीय सहयोग दें ताकि देश के सम्पूर्ण जनजाति समाज को स्वावलंबी एवं स्वाभिमानी बनाया जा सके।

गांधीजी का ग्राम स्वराज्य का विचार, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का अंत्योदय का सपना और आज के प्रधानमंत्री का आत्मनिर्भर भारत का संकल्प ये सब इसी प्रकार की नीतियों का पालन करने से साकार होगा बढ़ती वन आगजनी की घटनाओं एवं वन आधारित उद्योगों का तेजी से विकास वनवासी समाज की भागीदारी के बिना वन संरक्षण एवं जैवविविधता प्रबंधन संभव नहीं प्रदेश मे जरूरी है कि वन कार्ययोजना विकास से लेकर उसके क्रियान्वयन तक वनवासी समाज जिम्मेदारी एवं भागीदारी सुनिश्चित हो महिलाओं को प्रशिक्षण देकर समुदायिक वन प्रबंधन एवं आजीविका संवर्धन मैं वनोउपज का उपयोग प्रसंस्करण एवं बाजारीकरण ताकि वह इन्हें फिर अपने जीवन का हिस्सा बनाएं और प्रकृति उपासक समाज फिर इसके संवर्धन का दायित्व अपने हाथों में ले। □

नर्मदा अंचल के वृक्ष - हल्दू, कलम, कलंब

Haldu, Family RUBIACEAE

□ डॉ. सुदेश वाघमारे

वैज्ञानिक नाम - Haldina cordifolia syn. Adina cordifolia इस वैज्ञानिक नाम के पीछे का कारण यह है कि हिन्दी भाषी क्षेत्र में इसे हल्दू के नाम से पुकारा जाता है तथा लेटिन में कार्डिफोलिया का अर्थ हृदय का आकार है क्योंकि इसके पत्ते हृदय के आकार के होते है। इसलिए इसे Haldina cordifolia कहते है।

स्वभाव - मध्यम आकार का वृक्ष है जिसका वितान यानि छत्र काफी बड़ा होता है और अनुकूल वातावरण मिलने पर यह तीस मीटर तक ऊंचाई प्राप्त कर लेता है। नर्मदा अंचल के किनारे इसकी सामान्य ऊंचाई बीस मीटर तक होती है।

प्राकृत वास - यह मुरम, पथरीली एवं काली मिट्टी में अच्छी वृद्धि प्राप्त करता है। मध्यभारत में लगभग सभी जगह सागौन एवं साल के साथ मिश्रित वनों में पाया जाता है। इसकी शाखायें प्रायः क्षैतिज स्थिति में होती है तथा नीचे तने और जड़ के बीच में बटरेस होती है।

विवरण

छाल - नये वृक्षों में हल्के पीले रंग की छाल होती है यह पीलापन धीरे-धीरे बढ़ता जाता है एवं स्थानीय पर्यावरण के अनुसार कभी भूरा भी हो जाता है। सामान्यतः इसकी छाल हल्की चिकनी होती है।

पत्तियां - इसमें दो अनुपत्र रहते है जो नई निकलने वाली कलिकाओं को दो ओर से ढंके रहते हैं। इसको पहचानने का एक प्रमुख लक्षण यह भी है। ढकने वाले अनुपत्र सामान्यतः अप्रैल, मई एवं जून में दिखाई देते है तथा शीघ्र ही पत्ती विकसित होने के साथ गिर जाते हैं। हृदय के आकार की चौड़ी पत्तियों का शीर्ष नुकीला होता है। पत्तियां प्रारंभ में हरित गुलाबी होती है, परंतु बाद में गहरे रंग में परिवर्तित हो जाती हैं। यह पत्तियां एक दूसरे के विपरीत लगी होती हैं। इसका पर्णवृन्त 7.5 से 10 से.मी. लम्बा होता है।

फूल - एक छोटी गेंद के आकार के फूल मुंडक पर विन्यस्त रहते हैं। यह गेंद दो से तीन सेंटीमीटर चौड़ाई की होती है और उस पर लगे हुए फूल पीले रंग के और छोटे होते है। जब प्रत्येक छोटे से फूल की वर्तिकाग्र खुल जाती हैं तो एक गोल सुनहरी गेंद के रूप में मुंडक दिखाई देता है।

फल - फलों के मुंडक छोटे और काले होते हैं जिनका आकार फूलों के मुंडक के बराबर होता है। इसके बीज वर्षा ऋतु में जमीन पर गिर जाते है और जहां अच्छा प्रकाश और भुरभुरी मिट्टी मिलती है वहां सुगमता से अंकुरित हो जाते हैं। इसी विधि से इन्हें रोपणी में भी तैयार किया जा सकता है।

उपयोग - पेड़ की छाल से पीले रंग का रंजक (रंग) मिलता है। संश्लेषित रंगों का आविष्कार होने से पहले इससे ऊन एवं लिनन के कपड़ों को रंगा जाता था। वृक्ष से बहुत ही बढ़िया इमारती लकड़ी मिलती है जिसका उपयोग मकान निर्माण में किया जाता है। जहां पर साल के वन नहीं पाये जाते थे वहां पर इसका उपयोग रेल्वे स्लीपर बनाने में भी किया जाता था। आयुर्वेद में इसकी छाल का उपयोग एंटीसेप्टिक के रूप में किया जाता है तथा जड़ का उपयोग दस्त रोकने के लिए होता है।

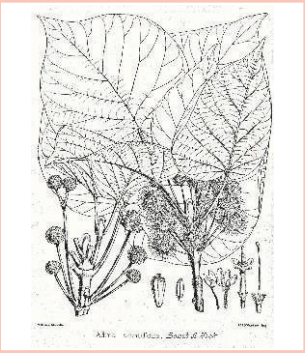

सतपुड़ा और विंध्याचल दोनों के जंगल में यह वृक्ष पाया जाता है परंतु अवैध कटाई और मकानों में उपयोग के कारण धीरे-धीरे इसके वृक्ष कम होते जा रहे हैं। मिश्रित प्रजातियों में इसका वृक्षारोपण न करने के कारण इसके संकटग्रस्ट होने का बड़ा कारण है। कई समुदायों में इसे पवित्र वृक्ष के रूप में माना जाता है तथा विवाह के कार्यक्रमों में भी उपयोग होता है। यह एक पर्णपाती वृक्ष है इसलिए पथ वृक्षारोपण में इसका उपयोग नहीं होता। कई समुदाय के ग्रामीण इसका उपयोग मकानों के निर्माण में करना अत्यन्त ही शुभ मानते है। इस वृक्ष को पहचानने का एक तरीका यह भी है कि इसके काले मुंडक फल लगभग एक वर्ष तक वृक्ष पर बने रहते हैं और उनकी उपस्थिति के कारण इसकी पहचान आसान होती है। इसमें नये पत्ते फरवरी से अप्रैल के बीच में आते है तथा फल जुलाई के पश्चात आते हैं। इसके संरक्षण के लिए आवश्यक है कि इस वृक्ष को मिश्रित प्रजातियों के वृक्षारोपण में व्यापक पैमाने पर रोपित किया जाए। □

खेतों को पानी पिलाती 'खेत तलाई' और जवाबदेही

डॉ. क्षिप्रा माथुर

(लेखक - दो दशक से पत्रकारिता और पत्रकारिता प्रशिक्षण से जुड़ी, पत्रकारिता में कैंपेन एडिटर, अमेरिका के ग्लोबल स्ट्रेट व्यू अखबार की कंसल्टिंग एडिटर हैं।)

राजस्थान में जहाँ पीने के पानी की कमी है, वहां किसानों के लिए खेत को पानी पिलाना तो पहाड़ तोड़ने के बराबर है। पर अब वहाँ खेत तलाई की योजना से किसानों को राहत मिली है। इस योजना में खेत में ही तलाई बनाने के लिए सरकार मदद करती है परन्तु उसके लक्ष्य के मुकाबले जरूरतमंदों की संख्या ज्यादा है। इसलिए सरकार को अपने लक्ष्यों को विस्तृत करना होगा। अनुदान देने में रिश्वतखोरी पर भी लगाम की जरूरत देश में जो राज्य सूखे की चपेट में आते हैं, वही बाढ़ की गिरफ्त में भी रहते हैं। यह विरोधाभास इसलिए है क्योंकि हमने जल प्रबन्धन के काम को सरकारी फाइलों में ही उलझा कर रखा है और सरकारी योजनाओं को घूसखोरों से बचाने में अब तक नाकामयाब रहे हैं। इस बार हुई बारिश में भी हर बार ही तरह देश के कई इलाके डूब में रहे तो कुछ पानी की बाट ही जोहते रहे। डूबने वाले इलाकों की त्रासदी है कि पानी की आवक तो खूब है लेकिन पानी के ठहराव का इन्तजाम नहीं होने से वह जनजीवन को खूब नुकसान पहुँचा लौटता है। और, यही इलाके फिर गर्मियों में पानी के लिए तरसते हैं। देश के सबसे गर्म और मौसम के थपेड़े सहने वाले राज्य राजस्थान के 727 बांधों में से करीब ढाई सौ बांध तो खाली ही हो गए हैं। राजधानी का रामगढ़ बांध कब का सूख चुका है और जयपुर सहित कई और जिलों की आबादी के लिए पानी की भारी किल्लत होने का अंदेशा है। ऐसे में किसानों की फिक्र में उनके खेत और फसलें तो हैं ही, जिन्हें वक्त से पानी पिलाना उतना ही जरूरी है जितना हमारे सूखे गलों को तर करना।

फसलों का झुलसना या डूबना, किसानों के जीवन-मरण का सवाल बना ही रहता है। इसीलिए सरकारें और संस्थाएं समेकित खेती पर काम करने पर जोर दे रही हैं जिसके अनेक मॉडल देश भर में मौजूद हैं। वैकल्पिक खेती सहित पशुपालन और स्थानीय तौर पर मुहैया अवसरों को उद्यमिता के साथ जोड़कर जो काम हो रहे हैं, उनमें पानी तो केन्द्र में रहेगा ही, उसका प्रबन्धन भी बेहद जरूरी मसला है जिसके बगैर न किसान खुशहाल होंगे और न ही जलवायु बदलाव के कारण उपजे संकटों से मुकाबला करने में हम कामयाब हों पाएंगे।

'खेत तलाई' से राजी किसान

राजस्थान में पिछले सालों में धरातल पर जमा होने वाले पानी से जुड़े काम में दो का जिक्र जुबान पर रहता है। पहला, पिछली भाजपा सरकार के दौरान मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन के जरिए सहेजे और फिर से जीवित किए गए पारम्परिक जल स्रोत और दूसरा, वर्तमान कांग्रेस सरकार में बड़े पैमाने पर जारी फॉर्म पॉण्ड के काम जिसका फायदा सीधे किसानों को मिल रहा है। गांवों में गोचर, ओरण, तालाब, बारिश के पानी को सहेजने के लिए बनी अनूठी वैज्ञानिक पारम्परिक जल संरचनाओं, टांकों और जमीन से पानी निकालने के लिए खोदे गए बोरवैल का एक पूरा ताना-बाना दिखाई पड़ता है। वहीं खेतों में सिंचाई के लिए छोटे बांध, लिफ्ट सिंचाई,

बूंद-बूंद सिंचाई जैसी कई व्यवस्थाएँ हैं। सूखे इलाकों में पारम्परिक सिंचाई की थिम्बक और खड़ीन जैसी प्रणालियाँ अब कहीं-कहीं देखने को मिलती हैं जिन्हें आधुनिक तकनीकी समझ से जोड़कर कारगर बनाने की छितरी ही सही, लेकिन कोशिशें हो रही हैं। खेतों को बारहमासी पानी पिलाने की सहूलियत के लिए नहरी इलाकों के किसान अपने खेतों की बगल में ही जो छोटा ताल यानी 'डिग्गी' बनाते हैं, उसके लिए सरकारी सहयोग मिलता है।

दूसरी ओर फॉर्म पॉण्ड यानी 'खेत तलाई' बारिश के पानी को भी खेतों में ही सहेजने का इंतजाम है जिसे सरकारी अनुदान मिलने से इस काम में काफी इजाफा हुआ है और किसान भी इस काम से बहुत राजी हैं। ये खेत तलाई जल संरक्षण के साथ ही खेत की नमी को कायम रखने का जरिया भी बनते हैं। रणथम्भौर सफारी के लिए मशहूर सवाई माधोपुर इलाके के किसान कैलाश चन्द्र मीणा इस बात से बेहद खुश नजर आते हैं कि ऐसी योजनाओं का पैसा अब किसानों के खाते में सीधे आने से बिचौलियों की भूमिका खत्म हो गई है। किसान ऑनलाइन ही आवेदन कर 'फॉर्म पॉण्ड' के लिए आवेदन करते हैं और खेत तलाई की खुदाई का खर्च सरकार से मिल जाता है। जमीन खोदकर बोरवैल से निकाले जाने वाले हार्ड पानी के मुकाबले बारिश के पानी में सारे पोषक तत्व होने से खेतों को भी यह पानी रास आता है। किसान इसके फायदे अच्छी पैदावार, साग सब्जी, फल-फूल के लिए तो ले ही रहे हैं, साथ ही खेतों को पिलाने के बाद ज्यादा बचे पानी को मछली और पशुपालन के काम में भी लेने लगे हैं।

बीस साल में बदली तस्वीर

राजस्थान में 60 प्रतिशत सिंचाई, जमीन के पानी से होती है और करीब 40 प्रतिशत तालाब, तलई, टैंकों के भरोसे यानी सतह के पानी से होती है। जमीन का पानी निकालने के लिए खेतों में खोदे गए बोरवैल के कारण प्रदेश के करीब तीन सौ ब्लॉक में से पाँच दर्जन डार्क जोन में आ चुके हैं। यह खतरे की घण्टी है जिसे खेत तलाई और परम्परागत जल स्रोत पूरी ताकत से दूर करने में जुटे हैं। खेत तलाई को जल आन्दोलन की अहम कड़ी मानें तो राजस्थान के कृषि और उद्यानिकी विभाग की ओर से पिछले 20 साल में 54,801 किसानों के खेत आबाद हुए हैं। दूसरी तरफ आपसी सहयोग से सामुदायिक स्तर पर भी फार्म पॉण्ड बनाने के काम की गिनती 3,535 तक पहुँच पाई है। इस साल 7,230 किसानों के और 80 साझेदारी के खेतों पर खेत तलाई बनाने के लिए राज्य और केन्द्र की सिंचाई योजना ने लक्ष्य तय किया है। हालांकि अनुदान हासिल करने में अड़चनें भी कम नहीं हैं और नियम-कायदे में उलझे किसान वक्त पर मदद नहीं मिलने पर अपने खर्चे से ही 'पॉण्ड' बनवा रहे हैं। इन्हें बनाने की तकनीक की खासियत यह है कि 20 गुणा 20 मीटर की ये तलाई 3 मीटर गहरी होती है और सतह से थोड़ी ऊँची बनाई जाती है। सामुदायिक तलाई लंबाई-चौड़ाई में 50 गुणा 50 मीटर या 100 गुणा 100 के आकार की होती है। कच्ची तलाई पर 63,000 रुपये और पक्का यानी प्लास्टिक की लाइनिंग वाली तलाई पर 90,000 रुपये का सरकारी सहयोग किसानों को मिलता है। सामुदायिक और साझेदारी वाले बड़े खेतों की जरूरत बड़ी होती है, इसलिए उनके लिए 100 गुणा 100 मीटर के 'पॉण्ड' पर ज्यादा से ज्यादा 20 लाख रु. दिए जाने का प्रावधान है।

खेती-किसानी में कंधे से कंधा मिलाकर काम करती महिलाओं से बात करने पर अन्दाज लगता है कि खेतों में रुकने वाले पानी के इस प्रबन्धन से उन्हें कितनी राहत मिली है। नहरी इलाकों में बनने वाली डिग्गियों और बारिश के पानी की साज-सम्भाल करने वाली खेत तलाई के फायदों पर युवा किसान रामनरेशी बताती हैं कि हमारे आस-पास बहुत लोगों ने तलाई बनवाई हैं। खेत में पूरा दिन खपने के बाद बमुश्किल पढ़ाई के लिए समय निकालने वाली रामनरेशी को मालूम है कि इसने किसानों के वक्त और ऊर्जा की बचत का बड़ा काम किया है। महिलाओं की मेहनत को गिनती में नहीं रखने वाला समाज अगर उनसे पूछेगा तो वे यही कहेंगी कि पानी के आस-पास होने से खेतों के साथ खुद की सुध लेने का वक्त मिलना भी मुमकिन होगा। हालाँकि खुले खेतों में उघड़ी तलाइयों में डूबने से होने वाले हादसों की खबरें भी आती हैं जिनसे डर फैलता है। सुविधा और सुरक्षा के बीच तालमेल के गंभीर मसलों पर ग्राम पंचायतों में चर्चा से समाधान उपजने चाहिए।

जवाबदेही और तकनीक

खेतों में खोदी जाने वाली ये खेत तलाइयां अपनी धमक तो बना चुकी हैं और इससे जमीन के नीचे के पानी की स्थिति में भी बेहतरी होने की गुंजाइश भरपूर है। मगर, इन्हें खुदवाने के लिए सरकार से सहयोग हासिल करने के लिए जद्दोजहद कम नहीं होती। जोधपुर के कुछ किसानों का कहना है कि सामान्य श्रेणी के किसानों के लिए सरकारी योजनाओं का लाभ लेना आसान नहीं है। और तलाई की खुदाई का काम वक्त रहते नहीं हो तो किसान नुकसान में रहता है। ऐसे में ज्यादातर किसान अपना पैसा निवेश करके ही 'पॉण्ड' बनवा लेते हैं। तलाई की अहमियत समझने वाले किसान अनुदान के लिए इतनी अधिक संख्या में आवेदन कर रहे हैं कि सरकार के इंतजाम नाकाफी साबित हो रहे हैं। सरकार ने निजी खेतों में करीब 7,000 अनुदान का लक्ष्य रखा था जबकि विभाग के पास अब तक 20 हजार से ज्यादा आवेदन आये हैं। ऐसे में फैसला इसका भी होना है कि सरकार सिर्फ संख्याओं में सिमटी रहे या असल जरूरत को समझते हुए अपने लक्ष्य को बड़ा करे।

तलाई सिर्फ किसान का अकेले का हासिल नहीं है, बल्कि पानी के संकट पर हमारी राष्ट्रीय चिंता का बड़ा मसला है। यदि राजस्थान इस मामले में मिसाल कायम करता है तो इससे देश भर में पानी के प्रबंधन के लिए और नवाचारों को भी ताकत मिलेगी। तकनीक के इस्तेमाल से असल जरूरत का आकलन करने के साथ ही योजनाओं को जरूरतमंदों तक पहुँचाने में पारदर्शिता भी आनी चाहिए। पानी के प्रबंधन में घूसखोरी बड़ा अपराध है जिसका इलाज शासन और प्रशासन को ही करना है। पानी को सहेजने के साथ ही उसके बूंद-बूंद इस्तेमाल को लेकर हमारी संजीदगी लगातार जाहिर होनी चाहिए। साथ ही किसान और कुदरत, दोनों से हमारे रिश्ते मजबूत करने के लिए व्यवस्था की जवाबदेही भी तय होनी चाहिए। □

'नदियाँ प्राकृतिक संपत्ति है, किसी का विशेष अधिकार नहीं'

ओम शंकर श्रीवास्तव

(लेखक - हाईकोर्ट के अधिवक्ता हैं।)

"सम्पूर्ण विश्व में भारत ही ऐसा भाग्यशाली देश है जिसके सर्वाधिक विस्तार में सुजल से भरी अनेकों नदियों का जाल बिछा हुआ है। भारत की इन्ही पूजनीय नदियों के तटों पर कभी महान एवं गौरवशाली नगरों का विकास हुआ तो कभी ये तट ऋषियों की तपोस्थली बने, जो इस बात को इंगित करता है कि जल, जीवन की सभी जरूरतों को पूरा करने के लिये आवश्यक ही नहीं, वरन अतिमहत्वपूर्ण संसाधन रहा है।"

प्राचीन काल से ही भारत नदियों का देश रहा है। भारत में नदियों को सिर्फ पूजा ही नहीं जाता बल्कि उन्हें माँ का दर्जा भी दिया गया है, क्योंकि हमारी संस्कृति में ऐसा माना गया है की हर नदी एक सभ्यता और अनेक संस्कृतियों की जननी है। भारतीय सभ्यता को अगर नदी सभ्यता का नाम दिया जाए तो यह शायद गलत नहीं होगा। सम्पूर्ण विश्व में भारत ही ऐसा भाग्यशाली देश है जिसके सर्वाधिक विस्तार में सुजल से भरी अनेकों नदियों का जाल बिछा हुआ है। भारत की इन्ही पूजनीय नदियों के तटों पर कभी महान एवं गौरवशाली नगरों का विकास हुआ तो कभी ये तट ऋषियों की तपोस्थली बने, जो इस बात को इंगित करता है कि जल, जीवन की सभी जरूरतों को पूरा करने के लिये आवश्यक ही नहीं, वरन अतिमहत्वपूर्ण संसाधन रहा है।

विगत दशकों में तीव्र नगरीकरण एवं आबादी में निरंतरता से हो रही बढ़ोतरी, पेयजल आपूर्ति की मांग तथा सिंचाई के लिए जल की मांग में वृद्धि के साथ ही औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार इत्यादि ने जल-संसाधनों पर काफी दबाव बढ़ा दिया है। एक ओर जल की बढ़ती मांग की आपूर्ति हेतु सतही एवं भूमिगत जल के अनियंत्रित दोहन से भूजल स्तर में गिरावट होती जा रही है, तो दूसरी ओर प्रदूषण की बढ़ती मात्रा से जल की गुणवत्ता एवं उपयोगिता में कमी आती जा रही है। अनियमित वर्षा, सूखा एवं बाढ़ जैसी आपदाओं ने भूमिगत जल पुनर्भरण को काफी प्रभावित किया है। लेकिन आज विश्व में कहीं नदियों की इतनी दुर्दशा व उपेक्षा दिखाई नहीं देती जितनी की इन्ही नदियों को पूजनीय मानने वाले भारत में।

आज विकास की अंधी दौड़ में औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार एवं तीव्र नगरीकरण ने देश की 14 प्रमुख नदियों को, ख़ासकर गंगा, यमुना, गोदावरी, कावेरी, नर्मदा एवं कृष्णा को प्रदूषित कर बर्बाद कर दिया है। जैसे कि एक प्रसिद्ध मामला है- एम.सी. मेहता बनाम भारत संघ-गंगा प्रदूषण-1985 में एमसी मेहता ने कानपुर में गंगा किनारे स्थित चमड़े के कारखानों को गंगा नदी में घरेलू और औद्योगिक कचरे और अपशिष्टों का निपटान करने से रोकने के लिए परमादेश की प्रकृति में एक रिट याचिका दायर की। इस याचिका में याचिकाकर्ता ने अदालत से अनुरोध किया कि वह सुप्रीम कोर्ट (कोर्ट) से अनुरोध करें कि जब तक वे जल प्रदूषण को रोकने के लिए जहरीले अपशिष्टों के उपचार के लिए कुछ उपचार संयंत्रों को बाध्यात्मक तरीके से अनिवार्य नहीं करते हैं, तब तक उत्तरदाताओं को गंगा नदी में अपशिष्टों को छोड़ने से रोकें। कोर्ट ने जल (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 1974 ('जल अधिनियम') के महत्व को बताया और गंगा नदी के प्रदूषण के कारण होने वाले उपद्रव को सार्वजनिक उपद्रव माना । जल की महत्ता को जानते हुए हमारे संविधान में पहले से ही सृष्टि के अनुपम उपहारों या प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा को महत्व दिया गया है, जैसे कि :

प्रदूषण मुक्त पानी और हवा प्राप्त करने का अधिकार अनुच्छेद 21 के तहत एक मौलिक अधिकार है। सुभाष कुमार बनाम बिहार राज्य और अन्य में सर्वोच्च न्यायालय ने यह माना है कि प्रदूषण मुक्त पानी और हवा प्राप्त करने का अधिकार अनुच्छेद 21 के तहत एक मौलिक अधिकार है। अनुच्छेद 21 के तहत सार्वजनिक स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी को प्राथमिकता दी गई है और सुप्रीम कोर्ट ने एक हरित पीठ के गठन का भी आदेश दिया।

अनुच्छेद 48-अ में राज्य सरकारों को यह जिम्मेदारी दी गयी है कि वह देश के पर्यावरण के संवर्धन के लिए हर संभव प्रयास करेगा।

अनुच्छेद 51-अ (द) में देश के नागरिकों के मूल कर्तव्यों में भी प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा और संवर्धन को बताया गया है। विदित हो कि नदी जल को राज्य सूची की प्रविष्टि-17 में रखा गया है, जबकि नदी

घाटी के नियमन और विकास को संघीय सूची की प्रविष्टि-56 में स्थान दिया गया है। लेकिन इन सबके बावजूद भी हम अपनी नदियों के दोहन और शोषण को रोक नहीं पाए हैं और इसलिए इन जीवनदायिनी नदियों और जल भंडारों को बचाने के लिए हमें कई कानून भी बनाने पड़े :-

1974 के जल प्रदुषण नियंत्रण कानून को बनाने के पीछे की वजह भी पानी की गुणवत्ता को बनाये रखना और उसे सजोंकर रखना है।

1984 में बना पर्यावरण संरक्षण कानून भी जल और नदियों के संरक्षण के लिए एक शक्तिशाली कानून है।

भूमिजल को बचने के लिए वैश्विक स्तर पर ऐसे अनगिनत उपाय अपनाये गए, लेकिन मानव के लिए उपयोग जीवनदायी जल और बढ़ती आबादी के लिए जल की उपलब्धता का बिगड़ता अनुपात चिन्ता का बड़ा कारण बना हुआ है। आने वाले समय में जल की कमी न हो और वह पीने योग्य भी रहे इसके लिए सबको सकारात्मक कदम उठाने होंगें। भारतीय नयायपालिका ने इस और काफी ठोस कदम उठायें है। पर्यावरण पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार नहीं है, यह बताते हुए एम.सी. मेहता बनाम कमलनाथ और अन्य मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने पर्यावरण का लोक न्यास सिद्धांत प्रतिपादित किया जिसमे कहा गया की नदियाँ और जलाशय प्राकृतिक संपत्ति है और इन पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार नहीं हो सकता । सदियों से चले आ रहे कावेरी जल विवाद को ख़त्म करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने नदियों को राष्ट्रीय सम्पत्ति का दर्जा दिया। न्यायालय द्वारा पानी को राष्ट्रीय संपत्ति बताते हुए यह कहा कि इस पर किसी भी राज्य का मालिकाना हक नहीं है, यह देश के अन्य राज्यों के बीच चल रहे जल विवाद को सुलझाने का एक मज़बूत आधार बन सकता है। न्यायालय ने कहा कि कोई भी राज्य व नदी के स्वामित्व को लेकर दावा नहीं कर सकता, क्योंकि यह एक प्राकृतिक सम्पत्ति है और इस पर पूरे देश का अधिकार है। कोई भी व्यक्ति पर्यावरण विवाद से सम्बन्धित कार्यवाही दर्ज करा सकता है - सुश्री बेट्टी सी. अल्वारेस बनाम गोवा राज्य और अन्य में न्यायालय ने बहुत ही साहसिक शब्दों में यह निर्धारित किया कि कोई भी व्यक्ति पर्यावरण विवाद से सम्बन्धित कार्यवाही दर्ज करा सकता है। सुश्री बेट्टी का आवेदन उनकी राष्ट्रीयता के प्रश्न के बिना विचारणीय है।

आज गंगा और यमुना जैसी पवित्र नदियाँ इतनी प्रदूषित हो गई हैं कि यमुना नदी को तो एक पर्यावरण संस्था ने 'मरी हुई नदी' तक घोषित कर दिया है। पर मनुष्य और मौसम द्वारा सताई गई नदियों के लिए न्यायालय कौन जाए! इसी के मद्देनजर उत्तराखंड उच्च न्यायालय द्वारा 20 मार्च, 2017 को दिया गया फैसला कई मायनों में ऐतिहासिक और अर्थपूर्ण है। इस फैसले ने गंगा, यमुना तथा सहायक नदियों को 'जीवित इंसान' की हैसियत दी है। इसी वर्ष 13 जून को उच्च न्यायालय का एक फैसला इस समस्या को दूर करने का रास्ता सुझाता है। न्यायालय ने राज्य में तालाबों और पोखरों पर किया गया अतिक्रमण हटाने का आदेश दिया। न्यायालय ने अपने फैसले में कहा कि सभी तालाबों को वर्ष 1951 की स्थिति में लाया जाए।

गंगा-यमुना को जीवित मानने पर सुप्रीम कोर्ट ने लगाई रोक - उत्तराखंड हाईकोर्ट ने बीते मार्च में गंगा और यमुना नदियों को जीवित इकाई का दर्जा दिया था, जिस पर उत्तराखंड सरकार ने आपत्ति दर्ज करवाते हुए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। इसी याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने इन दोनों नदियों को जीवित इकाई का दर्जे देने पर रोक लगा दी है 7 जुलाई 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने गंगा को जीवित इंसान का दर्जा देने संबंधी फैसले को रद्द कर दिया।

विकास एक सतत प्रक्रिया है जिसे रोका नहीं जा सकता है मानव जाति के उद्धार के लिए विकास जरुरी भी है, लेकिन हमें विकास के लिए ऐसा रास्ता अपनाना होगा जो हमारे संसाधनों को क्षति न पहुचाएँ। मतलब सस्टेनेबल डेवलपमेंट की राह पर चलकर ही हम अपने जल भंडारों को सुरक्षित रख सकते हैं। इन्ही सब बातों को ध्यान में रखते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने 13/01/2021 को एक आदेश दिया है।

दिल्ली जल बोर्ड बनाम हरियाणा राज्य और अन्य दिनांक 13/01/2021 के मामले में भारत के सर्वोच्च न्यायालय का आदेश। वर्तमान याचिका में यमुना में प्रदूषकों के निर्वहन के कारण अमोनिया के स्तर में वृद्धि और भारत में नदी प्रदूषण के बड़े स्तर पर सम्बन्धित है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि या तो डिस्चार्ज होने से पहले सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट के जरिए सीवेज का इलाज नहीं किया जाता है या ट्रीटमेंट प्लांट काम नहीं कर रहे हैं या खराब हो गए हैं। मुख्य न्यायाधीश एस.ए. बोबडे, न्यायमूर्ति ए.एस. बोपन्ना और न्यायमूर्ति वी. राम सुब्रमण्यम की पीठ ने 'प्रदूषित नदियों के उपचार' के संबंध में स्वतः मोटो रिट याचिका (सिविल) के पंजीकरण का निर्देश दिया। SC ने यमुना नदी के दूषित होने के मुद्दे के साथ शुरुआत की और आदेश दिया कि उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली और उत्तर प्रदेश राज्य को नोटिस जारी किया जाए।

सरकार द्वारा बनाये गए कानूनों और न्यायालयों के द्वारा दिए गए फैसलों और आदेशों से काफी हद तक नदियों को बचाने की तरफ ध्यान दिया गया है। फिर भी अगली पीढीयों तक नदियों और जलाशयों को सुरक्षित रखने के लिए कुछ और ठोस कदम उठाने होंगे नहीं तो धरती पर जीवन नामुमकीन हो जाएगा। पूरी मानव जाति को समझना होगा की जल ही जीवन है । □

पानी के नवाचार में अग्रणी नीदरलैंड

श्रीमती चारू जोशी

(लेखक- जलवायु परिवर्तन, शहरी प्रबंधन और विकास की विशेषज्ञ हैं।)

नीदरलैंड व्यापक रूप से दुनिया में सबसे सुरक्षित डेल्टा के रूप में जाना जाता है। इस देश का लगभग एक तिहाई हिस्सा समुद्र तल से नीचे है, और नहरों, झीलों, नदियों, बांधों और इस तरह की कई संरचनाओं और इनसे बने अपने आकर्षक परिदृश्य के बिना, इसका काफी हिस्सा अभी तक डूब चूका होता। नीदरलैंड का प्रसिद्ध डच डेल्टा, जो बांधों, dikes और sluices (तूफान अवरोधों) का एक नेटवर्क है जिसमें 13 खंड शामिल हैं, दुनिया की सबसे बड़ी बाढ़ सुरक्षा प्रणाली बनाता है और इसे आधुनिक दुनिया के सात अजूबों में से एक माना जाता है। जल नवाचार के अपने समृद्ध इतिहास के साथ, इस देश ने जल प्रबंधन और प्रौद्योगिकी के लिए एक अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा विकसित की है।

ऐतिहासिक रूप से, नीदरलैंड के पास जल प्रतिरोधी बनने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। देश का अधिकांश भाग समुद्र तल से नीचे होने के कारण उसके पास पानी से समझदारी से निपटने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं था। ऐसी संवेदनशीलताओं के बावजूद भी उन्होंने अपने देश को दुनिया के सबसे समृद्ध देशों में से एक में बदल दिया है। वास्तव में आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।

नीदरलैंड को जल नवाचार में अग्रणी माना जाता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि इसका एक कारण पानी पर नीदरलैंड द्वारा अनुसंधान पर खर्च किए गए संसाधनों की मात्रा और नवाचार में राष्ट्रीय सरकार का निवेश है। ये सभी जल नवाचार को अत्यधिक प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण रहे हैं। पानी देश के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में से एक है। नीदरलैंड पानी से संबंधित लगभग सभी नई तकनीकों का भी घर है यह देश हमेशा प्रौद्योगिकी और समझ में नवीनतम प्रगति का उपयोग कर रहा है। नीदरलैंड के जल वैज्ञानिकों ने पानी से सम्बन्धित समस्याओं के अभिनव समाधान खोजने में सफल रहे है। ऐसी समस्याएं जो समुदायों, अर्थव्यवस्थाओं और जीवन की गुणवत्ता के लिए खतरा है। उपायों की एक नीदरलैंड के शहरों को सुरक्षित और आकर्षक रखने में मदद करती है, जिसमें वह कार्यात्मक levees, flood-resilient buildings और green infrastruchure, जैसे ढाँचे शामिल हैं। देश की रणनीति एक ऐसी रणनीति से विकसित हुई है जिसने पहले पानी को बाहर रखने पर ध्यान केंद्रित किया और फिर पानी के साथ रहना और उसकी शक्ति का दोहन करना सीखा स्वयं को डूबने से बचाये रखने के साथ साथ, नीदरलैंड के जल वैज्ञानिक सामूहिक रूप से इस दिशा में भी काम कर रहे है कि भविष्य में संभावित सूखे को दूर करने के लिए पानी कैसे इकट्ठा किया जाए और जितना संभव हो उतना ही पानी बहाया जाए।

नीदरलैंड में पानी से संबंधित नवाचारों और प्रधाओं के बारे में बात करते समय ध्यान देने योग्य एक और बात यह है कि नवाचार के आसपास व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने से भी बहुत जोर दिया गया है। नए ज्ञान के उत्पादन में निरंतरता, कई विश्वविद्यालयों और ज्ञान संस्थानों के साथ नवाचार और निवेश की एक श्रृंखला बनाने से बाजार में नवाचार के उत्पादन की प्रक्रिया में तेजी आई है। इस तरह देश का सम्पूर्ण नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र सुव्यवस्थित है। इसके अलावा सहयोगी अनुसंधान कार्यक्रम, रियल वर्ल्ड टेस्टिंग, पायलटिंग और नई प्रौद्योगिकियों के अनुप्रयोग पर जोर देते हैं। शिक्षा जगत को

निवेश से जोड़कर यह नए समाधानों को विकसित वित्त पोषित, व्यावसायीकरण और एक ठोस नीव के साथ घरेलू स्तर पर स्केल करने में सक्षम बनाता है।

इस तरह, स्थानीय लोग अपने देश को ज्ञान अर्थव्यवस्था के रूप में देखते है और इसी लिए नीदरलैंड कुछ सबसे महत्वपूर्ण विषयों में प्रमुख अनुसंधान एवं विकास देशों के बीच एक शीर्ष स्थान रखता है। इस देश ने अंतर अनुशासनिक अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित किया है, जो विभिन्न विषयों में शोधकर्ताओं के साथ अधिक सहयोग की सुविधा प्रदान करता है। इसका तात्पर्य यह है कि पारिस्थितिकी तंत्र के सभी खिलाड़ियों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है और योगदान देना है। इस तरह प्रणाली (सिस्टम) अंतिम उपयोगकर्ताओं के साथ भी सार्थक जुड़ाव सुनिश्चित करती है। प्रौद्योगिकी के साथ-साथ, गेम-चेंजिंग इष्टिकोण विकसित करने के लिए सभी प्रमुख अभिनेताओं को शामिल करना महत्वपूर्ण रहा है। नीदरलैंड ने प्रदर्शित किया है कि ये सभी तत्व एक साथ कैसे आ सकते हैं। इस तरह, सिस्टम अंतिम उपयोगकर्ताओं के साथ सार्थक जुड़ाव सुनिश्चित करता है। वे इसे अपना 'पोल्डर मॉडल' कहते हैं जो सर्वसम्मति से निर्णय लेने की विधि को संदर्भित करता है। नीदरलैंड से पानी का गहरा जुड़ाव कई रूपों में दिखाई देता है, यहाँ तक कि 'पोल्डर मॉडल' शब्द भी पानी से सम्बन्ध रखता है। यह अवधारणा सांस्कृतिक रूप से निहित है और pluriformity और "cooperation despite differences" के विचारों को शामिल करता है।

पानी ने इस देश में कला, भोजन और संस्कृति को प्रेरित किया है। एक उदाहरण के रूप में, पानी नीदरलैंड के सबसे बड़े सांस्कृतिक कार्यों को प्रेरित करता है, जैसे की Elfstedentocht (Eleven Cities Tour) जो जमी हुई नहरों के साथ 200 किमी की नीदरलैंड की प्रसिद्ध आइस स्केटिंग दौड़ है। उस मायने में, नीदरलैंड की तरह पानी को कोई नहीं समझता। वे परिवहन, ऊर्जा और पर्यटन के लिए पानी से उत्पन्न होने वाली संभावनाओं और अवसरों के साथ-साथ बाढ़, सुरक्षा और प्रदूषण के जोखिमों को समझते हैं। इसके अलावा इस देश ने यह सुनिश्चित किया है की जल क्षेत्र में उसका जान गहरा और मजबूत हो, जो उसके नवाचारों और हस्तक्षेपों के लिए भी एक ठोस ज्ञान आधारित नीव प्रदान करता है। अनुसंधान और नवाचारों को दिए गए अत्यधिक महत्व के कारण, नीदरलैंड में हर दिन, सूक्ष्म स्तर तक पानी के रहस्यों पर शोध और खुलासे किये जाते हैं। इसलिए यह देश नियमित रूप से विश्वव्यापी अनुप्रयोगों के साथ उल्लेखनीय नवाचार प्रदान करता है। नीदरलैंड ने बाढ़ सुरक्षा, जल संरक्षण, जल गुणवत्ता नियंत्रण और शहरी जल प्रबंधन के लिए कुछ प्रमुख समाधान प्रदान किए हैं। ये हमेशा नई चीजों को आजमाने के लिए और कुछ करने का बेहतर तरीका खोजने के लिए तैयार रहते हैं। इसी लिए जब जल प्रौद्योगिकी में समस्याओं और चनौतियों के बारे में बात की जाती है तो "Bring in the Dutch" एक आम वाक्यांश बन गया है। हालांकि, नीदरलैंड के जल प्रौद्योगिकी क्षेत्र की पेशकश की पूरी सीमा अभी तक हर जगह जात नहीं है।

जल क्षेत्र में नीदरलैंड के प्रदर्शन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाना और सम्मानित किया जाता है। यह देश निश्चित रूप से कुछ सही कर रहा है। एक sustamable दुनिया के लिए नीदरलैंड का योगदान विशेष रूप से ऐसे समय में जब जलवायु परिवर्तन अर्थव्यवस्थाओं और दुनिया के लिए एक बड़ा खतरा बन गया है, पूरी दुनिया के लिए सीख है कि पानी एक सहायक हो सकता है अगर हम इसकी जटिलता को समझे, इसे व्यापक रूप से महत्व दें और इसे समावेशी रूप से प्रबंधित करें। जल जलवायु कार्रवाई और सतत विकास की ओर हम जो परिवर्तन चाहते हैं, जब उसके लिए एक तरह से उत्तोलन है। हम भी प्रकृति के साथ निर्माण पर ज्ञान को विकसित करने और साझा करने की दिशा में ज्ञान के आदान-प्रदान द्वारा नीदरलैंड के प्रयासों का लाभ उठा सकते हैं। □

नर्मदा की सहायक नदियाँ

बंजर नदी

बंजर नदी नर्मदा नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है। यह मुख्यतः मंडला बालाघाट क्षेत्र की प्रमुख नदी है। यह अपने उद्गम स्थल बंजारपुर (राजनाँदगाँव, छत्तीसगढ़) से निकलकर मंडला में महाराजपुर के निकट नर्मदा नदी में मिलती है। बंजर तथा नर्मदा नदी का संगम स्थल एक तीर्थ के रूप में विख्यात है। बंजर नदी की वजह से हवेली क्षेत्र (बम्हनी बंजर) इतना समृद्ध और विकसित हुआ है यही सिंचाई का एकमात्र सहारा है। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान का काफी क्षेत्र इस नदी के अपवाह बेसिन में स्थित है। नर्मदा और बंजर के संगम स्थल को नर्मदा संगम घाट कहते है यह मंडला जिले का एक प्रमुख दर्शनीय स्थल है। □

उद्भव समाज को वसुधैव कुटुम्बकम् के रूप में देखता है

मानवी अजित सिंह

(लेखक - उद्भव की अध्यक्षा, इंजीनियर, IIT दिल्ली और यूनाइटेड नेशंस वर्ल्ड फूड प्रोग्राम के PSL में प्रशासी अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं।)

उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल एवं दिल्ली क्षेत्र में कार्यरत स्वयंसेवी संस्थान उद्भव जो 2011 से ही शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में समाज में व्याप्त अनेक तरह के समस्याओं का समाधान अपने स्तर पर काम करती आ रही हैं। 2021 में उद्भव एनजीओ का काम देख कर भारत सरकार ने एक स्वयंसेवी संस्थान(NGO दर्पण) के रूप में मान्यता प्रदान की। उद्भव समाज को वसुधैव कुटुम्बकम (दुनिया एक परिवार है) के रूप में देखता है। यह समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए प्रयासरत है। उद्भव का समग्र उद्देश्य जीवन जीते हुए मानवता की सेवा करना है। यह मानव के सामाजिक विवेक को जगाने और उन्हें दुनिया भर के लोगों के साथ रचनात्मक रूप से काम करने का अवसर प्रदान करने का प्रयास करता है। हम अपनी टीम के सदस्यों में ऐसे सभी क्षेत्रों में लंबा अनुभव रखने वाले, चाहे वह तकनीकी हो या सामाजिक को जोड़ा है। हमारे समूह में IIT पृष्ठभूमि के लोग, राजनेता, जमीनी स्तर के नवप्रवर्तनकर्ता, सामान्य, प्रोफेसर/शिक्षक और रक्षा कर्मी शामिल हैं। हमारी टीम के पास इन ज़रूरतमंद लोगों के साथ काम करने का वर्षों का अनुभव है जो गरीबी के दुष्चक्र को तोड़ने और उन्हें सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, भागीदारी और आजीविका के अवसरों के अपने बुनियादी मानवाधिकारों तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं। उद्भव की भूमिका न केवल समाज सेवा बल्कि कई चीजों का उत्पादन करने के लिए तकनीकी रूप से जरूरतमंदों की मदद करना, गोद लेने के साथ बच्चों की भागीदारी, वयस्क शिक्षा सहित शिक्षा क्षेत्र में काम करना और ऐसी कई चीजें जो समाज की मदद करने की हमारी क्षमता और समाज को वापस देने की दिशा में एक कदम दिखाती हैं।

लॉकडाउन के दौरान हमने जौनपुर उत्तर प्रदेश के पांच गावों में जाकर सर्वेक्षण किया और लोगों की समस्या को जाना समझा, हमने पाया कि यहां पर COVID की वजह से केवल समस्याएं ही नहीं बल्कि कुछ भला भी हुआ था की लोग अपने घर लौट आये थे। तब हमारा प्राथमिक उद्देश्य बना की हम इस समस्या का समाधान करते हुए रिवर्स माइग्रेशन को रोककर उन्हें गांव में ही रोजगार प्रदान करें। इस दिशा में हमारा अगला कदम था कि हमने गांव के लोगों को कृषि विज्ञान केंद्र से जोड़कर उन्हें उनके पसंदीदा क्षेत्रों में ही प्रशिक्षण मुहैया करवाया जैसे- मशरुम की खेती, पशु पालन, मछली पालन, लेमनग्रास खेती, पत्तल बनाना और भी बहुत।

छुट्टा पशु की समस्या लगभग 3

गावों में दिखी, इस प्रकार की समय से लड़ने के लिए सरकार से मदद लेनी पड़ी और जो हर गावों में मौजूद जानवरों के लिए आश्रय था उसका इस्तेमाल किया गया और उसे उत्पादित गोबर को खाद के इस्तेमाल में लाया गया, जिसका प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केंद्र में दिलाया गया था। इस खाद को पुनः खेतो में डाला गया और जो खेत उपजाऊ होने के कारण बंजर पड़े थे उनमें अब प्राकृतिक खेती एवं जैविक खेती हो रही है। फिर समस्या आई की किस प्रकार इन खेती से उत्पादित समान को मंडी तक पहुँचाया जाये और मंडी में बिक्री न होने पर किन-किन चीजों का इस्तेमाल कर सकते है। इनसे प्राप्त उत्पादों से हमने आगे चलकर बहुत से अलग तरह के व्यवसाय भी उनसे जुड़वाएँ, उनमें से कुछ है विभिन्न तरह के अचार, मसाले, हल्दी पाउडर, मिर्च पाउडर इत्यादि। उद्भव के अंतर्गत बहुत सी ग्रामीण महिलाओं के स्व-सहायता समूह ने यह कार्य शुरू किया है। वह सब आगे आकर मिलकर साथ में अचार बनाती हैं और उद्भव की टीम उन्हें बाहर और पूरे देश भर में बेचने में मदद करती है और इसका सीधा लाभ और लाभार्थी वह गांव की महिलाएं ही होती है। इस तरह हमने करीब 50 लोगों को स्व-सहायता समूह के माध्यम से रोजगार दिलाया है।

किसान अच्छी पैदावार चाहता है, तो उसे खेत की मिटटी के तत्वों की जांच समय-समय पर करानी चाहिए क्योंकि तत्वों की कमी के चलते इसका सीधा असर पैदावार पर पड़ता है। कृषि विभाग के आंकड़ो पर गौर करें तो जौनपुर जिले में अधिकतर जगहों पर मिट्टी में नाइट्रोजन और फास्फोरस की कमी है। इसलिए कृषि विभाग किसानों को अपने खेत की मिट्टी की जांच कराने के लिए प्रेरित कर रहा है। अच्छी फसल के उत्पादन के लिए यह बहुत जरूरी है कि किसानों को यह पता हो कि खेत की मिटटी में किस तत्व की कमी है। इसी बात की जांच करने के लिए कृषि विभाग किसानों के खेत की मिटटी का नूमना मुफ्त में लेता है। कृषि विभाग मृदा की दो तरह से जांच करता है। पहली जांच प्राथमिक पोषक तत्व की होती है, जो कृषि विभाग में ही हो जाती है। जबकि दूसरी जांच सूक्ष्य पोषक तत्व की होती

“किसान अच्छी पैदावार चाहता है, तो उसे खेत की मिटटी के तत्वों की जांच समय-समय पर करानी चाहिए क्योंकि तत्वों की कमी के चलते इसका सीधा असर पैदावार पर पड़ता है। कृषि विभाग के आंकड़ो पर गौर करें तो जौनपुर जिले में अधिकतर जगहों पर मिटटी में नाइट्रोजन और फास्फोरस की कमी है। इसलिए कृषि विभाग किसानों को अपने खेत की मिटटी की जांच कराने के लिए प्रेरित कर रहा है।”

है। यह जांच वाराणसी में कराई जाती है। दोनों जांच की रिपोर्ट आने के बाद किसानों को बताया जाता है कि उनके खेत की मिट्टी में किस तत्व की कमी है। इसके अलावा किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड दिया जाता है। इस कार्ड में किसानों को यह बताया जाता है कि वह अपने खेत की मिटटी में तत्वों की कमी को किस तरह से दूर कर सकते हैं। कृषि विभाग के अनुसार जिले में नाइजट्रोजन और फास्फोरस की कमी है, जबकि पोटाश समान्य है। जिले के धर्मापुर, बक्शा, करंजाकला, सिकरारा, सिरकोनी, मड़ियाहूं, रामनगर, रामपुर, बरसठी, केराकत, जलालपुर, मुफ्तीगंज, मछली शहर, मुंगरा बादशाहपुर, सुजानगंज, बदलापुर, महराजगंज, शाहगंज, खुटहन, सुइथाकला ब्लॉक में नाइट्रोजन और फास्फोरस की कमी है। इन सभी कार्यों में उद्भव के कार्यकर्ता किसानों की मदद करते रहे और समय-समय पर प्रशिक्षण देते रहे। कुछ पुरुष जो प्रवास कर के गए थे वे अब खेतों में काम करके ऑर्गेनिक फार्मिंग, एग्जॉटिक फार्मिंग और मशरूम की खेती उत्पादन आदि करके अच्छा लाभ कमा रहे हैं। इस माध्यम से भी करीब 20 लोगों को एक सम्मानजनक व्यवसाय प्राप्त हुआ है और वह आत्मनिर्भर बने हैं।

उद्भव ने जमैथा गांव को भी गोद लिया था जो कि यूपी में बहुत ही महत्वपूर्ण गांव है। यह गोमती नदी के किनारे स्थित है। इसमें आम के पेड़ और अन्य पेड़ों का बहुत बड़ा जंगल है जो लगभग 500 एकड़ में फैला हुआ यह तरबूज के लिए भी प्रसिद्ध है जो अब चुट्टा पशु के कारण उस सीमा तक नहीं काटा जाता है। परमहंस मंदिर के रूप में अत्यंत पवित्र स्थान है। जमैथा का पुराना नाम जगदमन्यपुरम है। यहाँ पर परशुराम के पिता जमदग्नि ऋषि और माता रेणुका आश्रम हैं। एक पुल था जो 12 साल से नहीं बना था, लेकिन टीम उद्भव ने डीएम से मुलाकात की और मंत्री को लिखित पत्र भी लिखा और अब पुल बन गया है, उन्होंने तुरंत कार्रवाई करते हुए उस पुल का निर्माण करवाया और उसके आसपास के अन्य 12 पुलों का भी निर्माण करवाया गया अब वहां के लोग काफी खुश हाल हैं और आवागमन बढ़ जाने से वहां पर लोगों को रोजगार के भी अवसर प्राप्त हो रहे हैं तथा पढ़ाई-लिखाई में भी उनकी मदद हो पा रही है। बच्चों को स्कूल जाना आना सब आसान हो गया है।

इसी प्रकार से हमने खुले में शौच को बंद करने के लिए जो शौचालय बनके भी पूर्ण नहीं थे उनमे दरवाजे और कुछ स्थानों पर नए शौचालयों का निर्माण भी कराया।

डब्ल्यूएचओ और समय-समय पर भारत सरकार की हेल्थ मिनिस्ट्री द्वारा जारी किए गए गाइडलाइन के अनुसार हमने भी विभिन्न स्थानों पर मास्क बनवाए। चाहे वह दिल्ली हो यूपी हो, बिहार हो या पश्चिम बंगाल हो, हमने 2 लेयर, 3 लेयर, 4 लेयर यहां तक कि 5 लेयर तक के मास्क बनवाए। यह सभी मास्क गांव के लोगों द्वारा ही बनायें जाते और वहां की महिलाओं को इनके प्रशिक्षण दिया गया था। जिसकी वजह से वह आत्मनिर्भर बन सकें। हमने कल्चर हेरिटेज को संरक्षित करने के प्रयास हेतु हमने मधुबनी और मिथिला पेंटिंग को मास्क के ऊपर किया और इस एक प्रयास के फलस्वरुप हमने पाया कि जो मास्क अभी तक हमारी जान बचा रही थी वह मास्क हमारे विरासत को भी बचा रहे है। इस माध्यम से

हमने करीब 10 से 20 परिवारों को एक स्वतंत्र रोजगार प्रदान किया तथा उनके अंदर एक भावना प्रकट की कि वह अपनी कला को सार्वजनिक कर एक अच्छा और सम्मानजनक व्यवसाय कर सकते हैं। आजकल सभी लोग मास्क के अलावा चादर, बेडशीट, टेबल क्लॉथ, कुशन कवर, साड़ी, सूट आदि पर मधुबनी पेंटिंग कर अच्छा व्यवसाय कर रहे हैं।

उद्भव ने बीज बम और बीज राखी का भी इस्तेमाल किया और गांवों में बनवाया जो की पर्यावरण पोषण की तकनीक है जिसका इस्तेमाल हम अभी भी समय-समय पे करते हैं। इसमें मिट्टी और गोबर को पानी के साथ मिलाकर बनाया जाता है और रोड़ के किनारे या बगीचों में डालते है। यह सब भी एक रोज़गार की तरह लोगों को दिया गया। साबुन तथा चॉकलेट बनाने की भी ट्रेनिंग दी गई जिससे काफी लोगों ने घर में ही साबुन बनाना शुरू किया। कुछ लोगों ने इन साबुन और चॉकलेट को बाजार में भी उतारा है और वह बेचकर छोटे स्तर पर अच्छा मुनाफा पा रहे हैं और अपने जीवन में मदद पा रहे हैं। पश्चिम बंगाल, सागर आइलैंड में भी हम इस वक्त दूसरे संस्थानों के साथ मिलकर वहाँ के वैज्ञानिकों की मदद से लुप्त होने की कगार पे जो चावल के प्रजाति है उनका रोपण कर रहे हैं।

उद्भव अब जौनपुर में स्थित गोमती नदी पे अपना काम शुरू करने जा रहा है आईटीआरसी के शोधपत्र के मुताबिक चीनी मिलों और शराब के कारखानों के कचरे के कारण यह नदी प्रदूषित हो चुकी है। गोमती में जो कुछ पहुंचता है वह पानी नहीं बल्कि औद्योगिक कचरा होता है। सरकार भी मानती है कि गोमती में प्रदूषण का स्तर बढ़ा है। इतना ही नहीं यूपी सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट कमेटी ने तो इस नदी में प्रदूषण को लेकर सबसे कठोर टिप्पणी की थी। कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि गोमती की हालत ऐसी हो गई है कि इसमें डुबकी लगाने से लेकर इसके किनारों पर टहलने तक से परहेज करने की जरूरत है। इस कमेटी ने नदी के आस पास की जगह को बेहद प्रदूषित करार देते हुए नदी के 150 मीटर के दायरे में किसी तरह के निर्माण कार्य नहीं होने देने की समझाईश दी थी। इस सिलसिले में नदी के किनारे बसे 11 जिलों के डीएम को इस कमेटी ने नोटिस जारी कर कहा था वे जितनी जल्द हो सके इसे प्रदूषण से बचाने के लिए जरूरी इंतजाम करें। इसके साथ ही अनुपालन गारंटी के रूप में प्रदेश सरकार से 100 करोड़ रुपये जमा कराने के लिए एनजीटी से सिफारिश की गई। यह सबमें उद्भव ने जागरूकता कार्यक्रम किया है।

उद्भव का मानना है की शुरुआत हमेशा आज होती है और मानना है कि हम इस प्रकार से हमें केवल लोगों को काम करके नहीं देना है बल्कि उनको आत्मनिर्भर बनना है। □

जामुन की अद्भूत लकड़ी

नाव की तली में जामुन की लकड़ी क्यों लगाते हैं, जबकि वह तो बहुत कमजोर होती है -

क्या आप जानते हैं भारत की विभिन्न नदियों में यात्रियों को एक किनारे से दूसरे किनारे पर ले जाने वाली नाव की तली में जामुन की लकड़ी लगाई जाती है। सवाल यह है कि जो जामुन पेट के रोगियों के लिए एक घरेलू आयुर्वेदिक औषधि है, जिसकी लकड़ी से दांतो को कीटाणु रहित और मजबूत बनाने वाली दातुन बनती है, उसी जामुन की लकड़ी को नाव की निचली सतह पर क्यों लगाया जाता है। वह भी तब जबकि जामुन की लकड़ी बहुत कमजोर होती है। मोटी से मोटी लकड़ी को हाथ से तोड़ा जा सकता है।

नदियों का पानी पीने योग्य कैसे बना रहता है -

बहुत कम लोग जानते हैं कि जामुन की लकड़ी एक चमत्कारी लकड़ी है। यह पानी के अंदर रहते हुए सड़कर खराब नहीं होती बल्कि इसमें एक चमत्कारी गुण होता है। यदि इसे पानी में डूबा दिया जाए तो यह पानी का शुद्धिकरण करती है और पानी में कचरा जमा होने से रोकती है। कितना आश्चर्यजनक है कि हम जिन पूर्वजों को अनपढ़ मानते हैं उन्होंने नदियों को स्वच्छ बनाए रखने और नाव को मजबूत बनाए रखने का कितना असरकारी समाधान निकाला।

बावड़ी की तलहटी में 700 साल बाद भी जामुन की लकड़ी खराब नहीं हुई -

जामुन की लकड़ी के चमत्कारी परिणामों का प्रमाण हाल ही में मिला है। देश की राजधानी दिल्ली में स्थित निजामुद्दीन की बावड़ी की जब सफाई की गई तो उसकी तलहटी में जामुन की लकड़ी का एक स्ट्रक्चर मिला है। भारतीय पुरातत्व विभाग के प्रमुख श्री केएन श्रीवास्तव ने बताया कि जामुन की लकड़ी के स्ट्रक्चर के ऊपर पूरी बावड़ी बनाई गई थी। शायद इसीलिए 700 साल बाद तक इस बावड़ी का पानी मीठा है और किसी भी प्रकार के कचरे और गंदगी के कारण बावड़ी के वाटर सोर्स बंद नहीं हुए। जबकि 700 साल तक इसकी किसी ने सफाई नहीं की थी।

आपके घर में जामुन की लकड़ी का उपयोग -

यदि आप अपनी छत पर पानी की टंकी में जामुन की लकड़ी डाल देते हैं तो आप के पानी में कभी काई नहीं जमेगी। 700 साल तक पानी का शुद्धिकरण होता रहेगा। आपके पानी में एक्स्ट्रा मिनरल्स मिलेंगे और उसका टीडीएस बैलेंस रहेगा। यानी कि जामुन हमारे खून को साफ करने के साथ-साथ नदी के पानी को भी साफ करता है और प्रकृति को भी साफ रखता है।

कृपया हमेशा याद रखिए कि दुनियाभर के तमाम राजे रजवाड़े और वर्तमान में अरबपति रईस जो अपने स्वास्थ्य के प्रति चिंता करते हैं। जामुन की लकड़ी के बने गिलास में पानी पीते हैं। □

वार्षिक सदस्यता प्रपत्र

मैं ..... एक वर्ष के लिए नर्मदा समग्र त्रैमासिक पत्रिका की सदस्यता लेना चाहता/चाहती हूँ।

4 अंक - वार्षिक शुल्क 100 रूपये, (पोस्टल शुल्क सम्मिलित)

नाम : _____ लिंग : _____

कार्य : व्यवसाय ☐ कृषि ☐ नौकरी ☐ विद्यार्थी ☐ संगठन ☐

संस्था : _____ दायित्व/पद : _____

फोन : _____ मोबाइल : _____ ई-मेल : _____

पता : _____

जिला : _____ पिन कोड : _____ राज्य : _____

भुगतान विवरण : चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. : _____ दिनांक : _____ रूपये : _____

अदाकर्ता बैंक : _____ शाखा : _____

खाते की जानकारी (ऑन लाईन भुगतान हेतु)
Narmada Samagra
State Bank of India
Shivaji Nagar Branch, Bhopal, M.P.
Ac no. 30304495111
IFSC: SBIN0005798

दिनांक : _____ हस्ताक्षर : _____

"नदी का घर"
सीनियर एमआईजी -2, अंकुर कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, मध्यप्रदेश - 462016
दूरभाष + 91-755-2460754 ई-मेल : narmada.media@gmail.com

घाट स्वच्छता का सतत प्रयास

मध्यप्रदेश की जीवनरेखा नर्मदा के प्रदूषित होने की प्रमुख वजहों में से एक इसमें पूजा सामग्री डाला जाना भी है। गणपति विसर्जन या दुर्गापूजा के समय मूर्ति विसर्जन कर नर्मदा को प्रदूषित किया ही जाता है, नदी में पूजा सामग्री डालने का सिलसिला भी वर्षभर चलता रहता है। अक्सर नर्मदा किनारे घाटों पर लोगों को पूजा सामग्री नदी में फेंकते आसानी से देखा जा सकता है।

9 फरवरी नर्मदा जंयती के कार्यक्रमों के समापन होने के बाद बरमान नर्मदा तट चौंकाने वाला नजारा सामने आया। नर्मदा तट पर कूड़े-कचरे का अंबार लगा था। यहां से पूजा के लिए आने वाले कई लोग नर्मदा जी में पूजा सामग्री विसर्जित कर रहे थे और उसके बाद पॉलिथीन या कपड़े के खाली बैग वहीं फेंक कर जा रहे थे। आसपास के इलाकों में रहने वाले बच्चे, औरतें और अन्य लोग भी पूजा सामग्री लेकर नर्मदा जी में विसर्जित कर रहे थे। जब महाकौषल प्रांत नरसिंहपुर जिले के नर्मदा समग्र कार्यकर्ता महेंद्र कौरव जी ने बरमान घाट पर यह नजारा देख, तो उन्होंने ने उसी क्षण नर्मदा समग्र की घाट टोली और अन्य नदी अनुरागियों के साथ बरमान घाट को स्वच्छ बनाने को संकल्प लेकर इस कार्य में जुट गए।

नर्मदा जंयती के बाद पहले दिन के श्रमदान के बाद नर्मदा समग्र के कार्यकर्ताओं और महेंद्र कौरव जी ने यह अनुभव किया कि यह एक दिन की घाट सफाई सिर्फ औपचारिकता मात्र रह जाएगी। इसलिए अगर घाट को साफ और स्वच्छ रखना है, तो घाट सफाई का कार्य अनवरत रूप से जारी रखना होगा। फिर क्या था संकल्प से ही सिद्धी है को धेय मान नर्मदा समग्र कार्यकर्ता महेंद्र कौरव जी के नेतृत्व में बरमान घाट पर एक अनवरत चलने वाले स्वछता अभियान का शुभारंभ हुआ। इस अभियान में शुरूआत में दो-तीन दिन तो सिर्फ चार से पांच युवा कार्यकर्ता ही स्वै%छ्क भाव से सुबह-सुबह 6.00 बजे से घाट पर सफाई पर आते हैं। पर जैसे-जैसे यह

अभियान गति लेना आंरभ किया वैसे-वैसे इस को आम जन का भी सहयोग मिलना प्रांरभ हो गया और धीरे-धीरे यह संख्या 15-20 युवाओं तक पहुंच गई है। नर्मदा जी के स्वछता के इस अभियान में पास के ग्राम की छोटी बलिकाओं के साथ-साथ कॉलेज में पढ़ने वाली युवतियों को भी घाट सफाई के लिए प्रेरित किया है। यह घाट सफाई अभियान केवल घाट सफाई तक सीमित नहीं रहा बल्कि घाट पर रखे कूड़ेदान को खाली करके घाट से गंदगी दूर ले जाकर उसका निस्तारण करना और जल के अंदर से कचरे को बाहर निकालना सीढ़ियों पर जमा मिट्टी को साफ करना ऐसे कई स्वछता के कार्य इसमें शामिल किए गए हैं।

इस पूरे अभियान की सबसे रोचक बात यह है के जितने भी स्वयंसेवक घाट पर प्रतिदिन सफाई करने के लिए जाते हैं वह स्वप्रेरणा से घाट पर पहुंचते है इस कारण से ही आज भी यह क्रम अनवरत जारी है। कूड़ेदान को साफ करने और बाढ़ की मिट्टी साफ करने जैसे प्रशासनिक कर्तव्यों को भी नर्मदा समग्र के कार्यकर्ता अपना कर्तव्य मान कर पूरी निष्ठा से निर्वहन कर रहे हैं। इस अभियान की शुरुवात नर्मदा समग्र महेंद्र कौरव और नर्मदा समग्र के कार्यकर्ता व नदी अनुरागी प्रज्ञा पटेल, ऋ तंभरा साहू, चेतना विश्वकर्मा, अमृता प्रजापति, गुनगुन मिश्रा, महिमा नाथ, हर्षिता नाथ, निकिता साहू, मालती साहू, शिखा तिवारी, श्रेयांस नाथ, हर्षित सोनी, गुंजन सोनी, गौरी चौहान, माही मिश्रा, मालती मालवीय, रिया मिश्रा, मोनिका मालवीय, रवि विश्वकर्मा, अजय पटेल, अभय जोगी, निखिल साहू नरेश कटारिया, चंचलेश ठाकुर, सचिन सिलावट, अमन रजक, कमलेश ठाकुर, शांतनु अग्रवाल अमन तिवारी प्रदीप मौर्या सोनू नोरिया युवराज यादव अंशुल चौरसिया लकी विश्वकर्मा, गुनगुन मालवीय, तरुणा नोरिया श्रमदान को अपना कर्तव्य मान का अभियान का हिस्सा बन गए और यह ' म आगे भी जारी रहेगा और इस मुहिम सकारात्मक परिणाम हमें आगे भी मिलते रहेंगे। परंतु सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर अपने-अपने तरीके से नर्मदा जी की सफाई के सतत प्रयास किया जा रहा है। इसके तहत लोगों को जागरूक करने की दिशा में भी बहुत काम हो रहा है, लेकिन शायद इसमें कुछ कमी ही है जो अब भी लोग पूजन सामग्री नर्मदा में डालते नजर आते हैं। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि धार्मिक आयोजनों में नदियों का बहुत महत्व है और लोगों से यह अधिकार छीना नहीं जा सकता, लेकिन नर्मदा जी को बचाने के लिए यह भी आवश्यक है कि कोई ऐसा रास्ता निकाला जाए जिससे लोगों की आस्था को भी ठेस न लगे और नर्मदा मां प्रदूषित भी न हो। □

पूज्य गुरूदेव महामंडलेश्वर श्री 1008 श्री ईश्वरानंद ब्रह्मचारी जी (श्री उत्तम स्वामी जी) ने अपनी परिक्रमा मार्ग में पड़ाव के दौरान ग्राम बखतगढ़ में 29.03.2022 को एवं 30.03.2022 ग्राम साकड़ी तह. सोंडवा जिला अलीराजपुर नर्मदा समग्र के कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्रदान किया। साथ ही स्वामी जी ने त्रिवेणी (बरगद पीपल और नीम) का रोपण भी किया।

रेवा सेवा केंद्र, ककरना में डॉ. हेडगेवार रुग्णालय के सहयोग से गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की चिंता हेतु दाई मां और आशा कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें फिल्ड टेस्टिंग किट में माध्यम से गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की जांच कैसे की जाए इसका बारे में बताया गया। इस कार्यशाला में 30 महिलाओं ने भाग लिया। इस कार्यशाला में प्रशिक्षक के तौर पर औरंगाबाद से डॉ. प्रतिभा फाटक, डॉ. आंनद फाटक, शिरपुर से डॉ. सुज्जवल धनगर, डॉ. सौरभ मारू ने प्रशिक्षण दिया। इस दौरान साथ में वनवासी कल्याण परिषद के अखिल भारतीय अधिकारी श्री गिरीश कुबेर, निमाड़ अभ्युदय की संस्थापक सुश्री भारती दीदी ठाकुर, उपाध्यक्ष श्री महेश जी दाभक (राष्ट्रीय नीति आयोग शिक्षा मंडल सदस्य), प्रकल्प समन्वयक श्री दिग्विजय जी चौहान और नर्मदा समग्र से श्री मनोज जोशी एवं अन्य स्थानीय कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पृथ्वी पर हम अकेले नहीं हैं"

श्रेयांश जैन

दया खत्म हो गई, हिंसा चरम पे हैं
मानव और उसकी संवेदना अंतिम मरण पे हैं

गर्भवती थी वो माता, फल देने वाला इंसान था
कर भरोसा खाया उसने,उसके लिए तो भगवान था ।
भगवान और इंसान, भरोसा किया तूने यह कैसे,
चंद मिनटों में फटा मुँह और लूथड़े फटे हो जैसे
टूटे दांत,फटी सूड़, यह कृत्य इंसान का गुरूर था
तीन दिन से भूखी प्यासी,साथ बच्चा बेकसूर था ।
एक माँ खत्म हो गई, नफरत चरम पे हैं
मानव और उसकी संवेदना अंतिम मरण पे हैं।

पानी के लिए ऊँट मारे गए,
रहने के लिए जंगल उखाड़े गए
हंसी के लिए कुत्ते को डुबा डाला,
भूख के लिए जानवर चवा डाला
पृथ्वी के गर्भ से चूसा मीठा पानी
फिर हवा में जहर मिला डाला
मिट्टी के बांध गले में रस्सी
उसका भी दम निकाल डाला
उफ़! दुनिया खत्म हो रही,लालच चरम पे हैं
मानव और उसकी संवेदना अंतिम मरण पे हैं ।

बस अब समय आ गया हैं,अब रोकना होगा हमें
नहीं तो एक-एक करके सब भोगना होगा हमें
नहीं तो पड़ेगी भीषड़ गर्मी सब सूख जाएगा
पिघलेगी इतनी बर्फ की सब डूब जाएगा ।
अभी तो बस छोटा अंश देखा हैं,पूरा खज़ाना बाक़ी हैं
मूर्खता से मरे हैं कुछ हज़ार,न मानें तो पूरा जमाना बाकी हैं।
हमे समझाने प्रकृति अपना हक दिखा रही हैं,
इसलिए हमें अब सबक सिखा रहीं हैं।

यह सदी पर्यावरण संरक्षण की हैं इसे मानो
इंसानों के साथ वन्यजीव और पेड़ो का महत्व पहचानों
प्रकृति रहीं तभी तुम बच पाओगे
यह सच हैं मान लो नहीं तो फिर पछताओगे।।
मांफी मांग लो प्रकृति से,वो सब जानती हैं
हम तो उसके बच्चे हैं वो सबको पहचानती हैं।
साथ ही मांसाहार भी हटाओ अपनी थाली से
वहां भी कोई बेजुवान ही मरता हैं तुम्हारी नादानी से।
प्रकृति के बेटे इंसान और जानवर कोई चचेरे नहीं हैं
एक अदना से सच यह हैं कि पृथ्वी पर हम अकेले नहीं हैं।

www.narmadasamagra.org RNI No. - MPHIN/2011/38276

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2 अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित। संपादक कार्तिक सप्रे। फोन नं. : 0755-2460754